हिमालयन मेडिटेशन

दिनदर्शिका २०२६

काल, मौन और ब्रह्मांडीय लय की यात्रा

सप्तर्षियों की वाणी से जाग्रत हो श्वास और आत्मा!

| ऋषि परम्परा |

निष्काम सेवा

निःस्वार्थ सेवा क्यों महत्वपूर्ण है?

योगी कहते हैं किअपने-अपने ऋणों को चुकता किए बिना कोई भी व्यक्ति आत्मज्ञानी नहीं बन सकता (उसका आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता)। निःस्वार्थ अथवा निष्काम सेवा करने से आपके ऋण चुकता होते हैं। सेवा आपको मानसिक स्तर पर स्पष्टता देती है, योगी इसे 'चित्तशुद्धि' कहते हैं और इस प्रकार करते-करते आप ध्यान की गहरी अवस्था को प्राप्त करते हैं। जब आप दूसरों की सेवा करते हैं तो आपको स्वतः ही आनंद की अनुभूति होती है। यही सृष्टि का नियम है। हिमालयन मेडिटेशन, सभी भौतिक सीमाओं से परे जाकर, निःस्वार्थ सेवा कर, सभी जीवात्माओं को सुख और आनंद प्रदान करने का कार्य करता है। यह कैलेंडर निष्काम सेवा का ही एक उदाहरण है। हिमालयन मेडिटेशन में सेवकों ने अपनी-अपनी दिनचर्या से समय निकाल कर इस कैलेंडर को डिज़ाइन, प्रकाशित और वितरित किया है।

हिमालयन मेडिटेशन द्वारा की गईं निःस्वार्थ सेवाएँ इस प्रकार हैं:

भगवद् गीता सेवा
मंदिर सेवा
वैदिक अनुसंधान
हिमालयन किड्स
कला, संस्कृति सेवा
यज्ञ सेवा

यज्ञ सेवा

कृतज्ञता- हिमालयी ऋषि न केवल त्योहारों पर, पूर्णिमा और अमावस्या के दिन समस्त देवताओं के प्रति अपना आभार व्यक्त करने के लिए यज्ञ करते हैं परन्तु जब-जब देश किसी भी प्राकृतिक आपदा से गुजरता है, तब-तब स्थायी समाधान और शुद्धिकरण लाने के लिए ऋषि देवताओं से प्रार्थना करते हैं। अपनी इच्छानुसार यज्ञ सेवा में योगदान दें।

श्रीमद् भगवद् गीता सेवा

हम, श्रीमद् भगवद् गीता का 180 से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद कर रहे हैं और गीता के सही जप और अर्थ पर शिक्षा भी प्रदान कर रहे हैं, साथ ही श्रीमद् भगवद् गीता के ज्ञान को अपने दिन-प्रतिदिन की दिनचर्या में कैसे लागु किया जाए इस पर भी शिक्षा देते हैं। व्यक्तिगत विकास के लिए श्रीमद् भगवद् गीता की सेवा में हमसे जुड़ें।

मंदिर सेवा

मानवता के लाभ के लिए हिमालयन मेडिटेशन के सेवक सक्रिय रुप से सभी मंदिरों में जाकर 'हनुमान हृदय मालिका' और शक्तिशाली 'अष्टकम्', स्तुति के बोर्ड लगाते हैं। हरि, गुरु कृपा और साधकों की भक्ति से, केवल एक ही वर्ष में हम २००० से अधिक बोर्ड लगा चुके हैं। आस-पास के मंदिरों में भी नियमित रुप से इन अत्यंत शक्तिशाली अष्टकम् का सामूहिक जप किया जाता है। यदि आप मंदिर सेवा में भाग लेना चाहते हैं, कृपया हमसे संपर्क करें।

वैदिक अनुसंधान

क्या आप जानते हैं कि, आधुनिक अंतरिक्ष अनुसंधान का मूल, महर्षि भरद्वाज का प्राचीन विमान शास्त्र है? महर्षि भरद्वाज के विमान शास्त्र और भारत के अन्य अविश्वसनीय आविष्कारों, तथा ज्योतिष, खगोल विज्ञान, धातुकर्म, सर्जरी, इंजीनियरिंग, वास्तुकला और वैदिक युग के विभिन्न विज्ञानों के विषय में जानने के लिए हमारी वैदिक अनुसंधान सेवा से जुड़ें।

अधिक जानकारी और हमसे संपर्क करने ले लिए हमारी वैबसाइट देखें: https://thehimalayanmeditationadipurusha.wordpress.com/

Contact us: +91 7506910073, +91 8886466222

हिमालयन किड्स

हिमालयन किड्स सुचारु व सचेत परवरिश की ओर पहला पग है। बच्चों के जीवन को आकार देना मिट्टी को ढालने जैसा है इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उनके प्रारंभिक वर्षों से ही उन्हें सही दिशा दें और समय के साथ उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में सशक्त बनाएँ। हम बच्चों के लिए एक 'एकाग्रता-निर्माण कार्यक्रम' करते हैं जो उन्हें अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करने, अच्छी आदतें बनाने और नैतिक रुप से अनुशासित होने में मदद करेगा। हम उन्हें श्लोक, मंत्र और हमारी संस्कृति और परम्पराओं के विषय में भी सिखाते हैं। सरल से यह ध्यान क्रियायें उन्हें तनाव, चिंता और दबाव से निपटने में मदद करते हैं। उनके भविष्य को संवारने में हमारी मदद कीजिए और हमसे जुड़िए।

कला और संस्कृति

हम सभी को हमारे दयालु भगवान ने कुछ न कुछ प्रतिभा प्रदान की हैं, जैसे गायन, नृत्य, पेंटिंग, वॉयसओवर की कला, वीडियो व रील्स बनाना, या डिजिटल पेंटिंग करना। अपने कौशल को श्री हरि की सेवा में लगाने के लिए हमसे जुड़ें। अपनी प्रतिभा, कला और रचनात्मकता से हमारे इस सेवा कार्य में योगदान दें, कृपया हमसे संपर्क करें।

महर्षि वशिष्ठ

॥ वशिष्ठाय नमस्तुभ्यं सप्तर्षीणां वरिष्ठाय। योगवशिष्ठप्रवक्ता ज्ञानदीपप्रदीपकः॥

मैं महर्षि वशिष्ठ को प्रणाम करता हूँ – जो सप्तर्षियों में श्रेष्ठ हैं, जिन्होंने योगवशिष्ठ का उपदेश दिया और ज्ञान के दीप को प्रज्वलित किया।

जनवरी : पौष-माघ

सोम		कृ द्वितीया **05**	स्वामी विवेकानंद जयंती कृ नवमी **12**	**माघ** इष्टि माघ नवरात्रि शु प्रतिपदा **19**	मासिक दुर्गाष्टमी गणतंत्र दिवस भीष्म अष्टमी शु अष्टमी **26**
मंगल		संकष्टी कृ तृतीया, कृ चतुर्थी **06**	लोहड़ी भोगी पण्डिगाई कृ दशमी **13**	शु द्वितीया **20**	मासिक कार्थिगाई शु नवमी **27**
बुध		कृ पंचमी **07**	षटतिला एकादशी मकर संक्रांति मकरविलक्कु उत्तरायण पोंगल कृ एकादशी **14**	शु तृतीया **21**	रोहिणी व्रत शु दशमी **28**
गुरु	**पौष** प्रदोष रोहिणी व्रत इंग्लिश न्यू ईयर शु त्रयोदशी **01**	कृ षष्ठी **08**	मट्टू पोंगल माघ बिहू कृ द्वादशी **15**	विनायक चतुर्थी रामलल्ला प्रतिष्ठान दिवस शु चतुर्थी **22**	जया एकादशी शु एकादशी **29**
शुक्र	शु चतुर्दशी **02**	कृ सप्तमी **09**	प्रदोष मासिक शिवरात्रि कृ त्रयोदशी **16**	वसंत पंचमी शु पंचमी **23**	प्रदोष शु द्वादशी, शु त्रयोदशी **30**
शनि	पूर्णिमा अन्वाधान पूर्णिमा **03**	कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी कृ सप्तमी **10**	कृ चतुर्दशी **17**	स्कंद षष्ठी शु षष्ठी **24**	शु त्रयोदशी, शु चतुर्दशी **31**
रवि	पूर्णिमंत इष्टि माघ* उत्तर कृ प्रतिपदा **04**	कृ अष्टमी **11**	**अमावस्या** अन्वाधान अमावस्या **18**	रथ सप्तमी भानु सप्तमी नर्मदा जयंती शु सप्तमी **25**	

हिमालयन मेडिटेशन

महर्षि पराशर

• वैदिक ऋषि • ज्योतिषाचार्य • पर्यावरण वैज्ञानिक • दार्शनिक

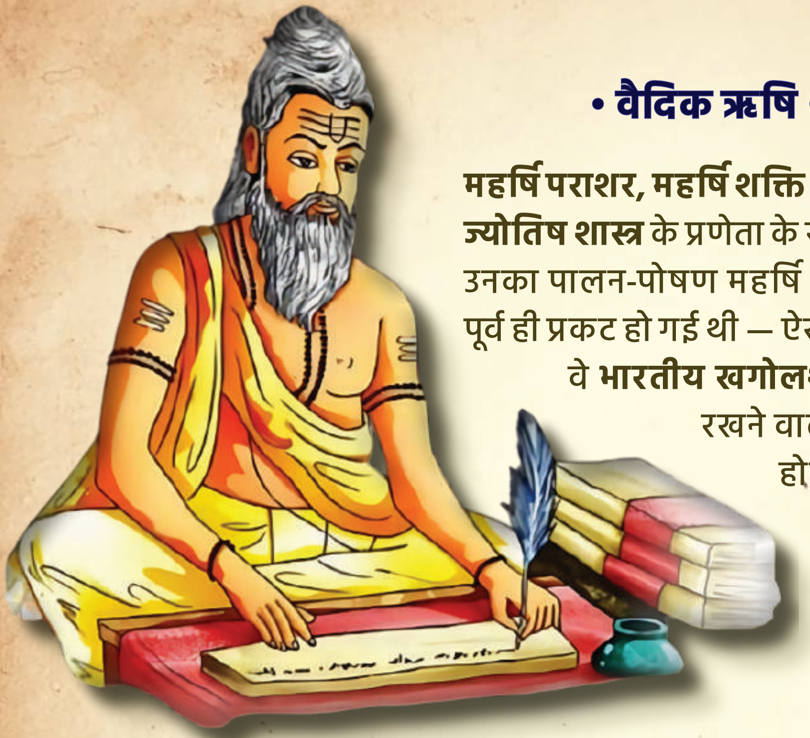

महर्षि पराशर, महर्षि शक्ति और **देवी अदृश्यंती** के पुत्र तथा महान **महर्षि वशिष्ठ** के पौत्र, **ज्योतिष शास्त्र** के प्रणेता के रुप में पूज्य हैं। पिता महर्षि शक्ति के संसार त्यागने के पश्चात् उनका पालन-पोषण महर्षि वशिष्ट द्वारा किया गया। महर्षि पराशर की प्रतिभा जन्म से पूर्व ही प्रकट हो गई थी — ऐसा माना जाता है कि उन्होंने गर्भ में ही वेदों का पाठ किया था। वे **भारतीय खगोलशास्त्र, दर्शन, साहित्य** और **आध्यात्मिक विज्ञान** की नींव रखने वाले प्रारंभिक ऋषियों में से एक हैं। **महर्षि वेदव्यास** के पिता होने के नाते, उनकी विरासत आज भी भारतीय विचारधारा और परंपरा को आकार देती है।

नमः पराशरायैव ज्ञानविज्ञानसागरम् ।
ऋषिस्वरुपं सत्यं च धर्मस्य प्रतिपादकम् ॥

क्षेत्र	कालातीत योगदान	आधुनिक पुष्टि या समानता
ज्योतिष शास्त्र (वैदिक ज्योतिष)	• ‘बृहत् पराशर होरा शास्त्र’ की रचना की; जो हिंदू ज्योतिष का मूल ग्रंथ है। • नवग्रह, नक्षत्र, भाव और दशाओं की परिभाषा दी – ये प्रणालियाँ आज भी प्रचलित हैं। • राहु और केतु को छाया ग्रह के रूप में पहचाना – ये भौतिक पिंड नहीं बल्कि गणनात्मक बिंदु (चंद्र बिंदु) हैं।	आज खगोलशास्त्र राहु को आरोही बिंदु और केतु को अवरोही बिंदु के रूप में स्वीकार करता है। यही वे सटीक बिंदु हैं जिनका उपयोग नासा सूर्य और चंद्र ग्रहण की भविष्यवाणी के लिए करता है।
ब्रह्मांड-दृष्टा	• सप्तर्षि नक्षत्र मंडल का मानचित्रण किया और महर्षि कश्यप को सौर वंश का प्रवर्तक बताया। • वैदिक पंचांग में प्रयुक्त २७००-वर्षीय सप्तर्षि नक्षत्र चक्र का परिचय दिया। • मानसिक गणना और नेत्र निरीक्षण द्वारा ग्रह गोचर एवं ग्रहण इत्यादि खगोलीय घटनाओं का अवलोकन किया।	यह उन खगोलीय चक्रों से मेल खाता है जिन्हें दूरबीनों, सॉफ़्टवेयर और उपग्रह डेटा द्वारा ट्रैक किया जाता है।
कृषि और पारिस्थितिकी	• ‘कृषि पराशर’ में वर्षा की भविष्यवाणी हेतु पवन की दिशा, बादलों का रंग, पशुओं का व्यवहार और चंद्र चरणों का उल्लेख किया गया। • कृषि उपज चक्र, मिश्रित खेती और गोबर व राख जैसे प्राकृतिक खादों की अनुशंसा की।	ये विधियाँ अब टिकाऊ और जैविक कृषि पद्धतियों के रूप में मान्यता प्राप्त कर रही हैं। एकल उपज प्रणाली के प्रति उनकी चेतावनी आज की मृदा क्षरण और जलवायु परिवर्तन से लड़ने की प्रयत्नों से मेल खाती है।
धर्म और नीति	• ‘पराशर स्मृति’ में अनुकूल धर्म और करुणामय न्याय का समर्थन किया गया।	यह पुनर्स्थापनात्मक न्याय और परिस्थितिजन्य नैतिकता से मेल खाता है।
वेदांत और पुराण साहित्य	• ‘विष्णु पुराण’, ‘पराशर गीता’ में योगदान दिया; आत्मा को इंद्रियों से परे, अति सूक्ष्म के रूप में वर्णित किया।	यह चेतना के न्यूरोसाइंस और क्वांटम सिद्धांतों से समानता रखता है।
सांस्कृतिक समन्वय और शिक्षा	• आध्यात्मिक, पारिस्थितिक और खगोलीय ज्ञान को एकीकृत किया; ऋषित्व और गृहस्थ जीवन के बीच सेतु स्थापित किया।	यह विज्ञान, नैतिकता और आध्यात्मिकता को समाहित करने वाली एकीकृत शिक्षा को प्रेरित करता है।

महर्षि पराशर, सनातन ज्ञान के मूर्तिमान स्वरुप, जिन्होंने ब्रह्मांडीय दृष्टि, पारिस्थितिक संतुलन और आध्यात्मिक सत्य को एकीकृत किया — वे अपने काल से कहीं आगे थे, और आज उनके विचार आधुनिक विज्ञान में प्रतिध्वनित होते हैं। ज्ञान के सागर और धर्म के उद्घाटक महर्षि पराशर को कोटि-कोटि प्रणाम।

हिमालयन मेडिटेशन

महर्षि शक्ति

॥ शक्तिं नमामि ऋषिसत्तमं तं वशिष्ठपुत्रं तपसा विभूतम् । येन प्रवृत्ता ऋषिपारम्पर्या पाराशरेणाखिलधर्ममार्गे ॥

मैं महर्षि शक्ति को प्रणाम करता हूँ – जो ऋषियों में श्रेष्ठ हैं, महर्षि वशिष्ठ के पुत्र हैं, और तपस्या से प्रकाशित हैं। महर्षि शक्ति के तेजस्वी पुत्र महर्षि पराशर द्वारा धर्ममार्ग का निर्देशन करते हुए ऋषि-परंपरा का गौरवपूर्ण विस्तार हुआ।

फ़रवरी : माघ-फाल्गुन

सोम		पूर्णिमंत फाल्गुन* उत्तर इष्टि कृ प्रतिपदा 02	जानकी जयंती कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी कृ अष्टमी 09	कृ चतुर्दशी 16	मासिक कार्थिगाई शु षष्ठी 23
मंगल		कृ द्वितीया 03	कृ अष्टमी 10	अमावस्या वलयाकार सूर्य ग्रहण अन्वाधान अमावस्या 17	मासिक दुर्गाष्टमी फाल्गुन अष्टाह्निका प्रारंभ शु सप्तमी, शु अष्टमी 24
बुध		कृ तृतीया 04	कृ नवमी 11	फाल्गुन इष्टि शु प्रतिपदा 18	रोहिणी व्रत शु नवमी 25
गुरु		संकष्टी कृ चतुर्थी 05	कृ दशमी 12	फुलेरा दूज छ शिवाजी महाराज जयंती (ग्रेगोरियन) 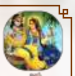 श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती 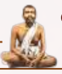 शु द्वितीया 19	शु दशमी 26
शुक्र		कृ पंचमी 06	विजय एकादशी कुंभ संक्रांति कृ एकादशी 13	शु तृतीया 20	अमलकि एकादशी शु एकादशी 27
शनि		यशोदा जयंती कृ षष्ठी 07	प्रदोष कृ द्वादशी 14	विनायक चतुर्थी शु चतुर्थी 21	नृसिंह द्वादशी शु द्वादशी 28
रवि	थाईपुसम पूर्णिमा ललिता जयंती अन्वाधान गुरु रविदास जयंती पूर्णिमा 01	भानु सप्तमी कृ सप्तमी 08	मासिक शिवरात्रि महाशिवरात्रि कृ त्रयोदशी 15	स्कंद षष्ठी शु पंचमी, शु षष्ठी 22	

‘छन्द’ से ‘कोड’ तक

रहस्यमयी फिबोनाच्ची कथा

क्या आपने कभी प्रकृति की सटीकता पर ध्यान दिया है?

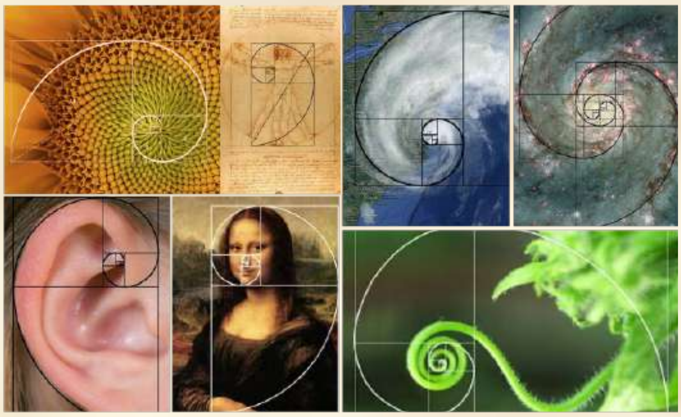

फूल की पंखुड़ियों की गिनती, सूर्यमुखी की सुंदर घुमावदार रचना, शंख की वक्रता, यहाँ तक कि आपके हाथ की बनावट? ऐसे स्थानों में भी जहाँ सब कुछ अव्यवस्थित लगता है—जैसे कि काँटेदार कैक्टस या दूरस्थ आकाशगंगा—वहाँ भी एक अद्भुत व्यवस्था होती है। ऐसा लगता है जैसे ब्रह्मांड किसी गुप्त लय में गुनगुना रहा हो। क्या हो अगर यह संयोग नहीं, बल्कि एक रचना हो— एक लय। एक संतुलन। एक पवित्र ज्यामिति।

फिबोनाच्ची अनुक्रम

यह रहस्यमयी संरचना आज **‘फिबोनाच्ची अनुक्रम’** के रूप में जानी जाती है। **०, १, १, २, ३, ५, ८, १३, २१, ३४, ५५, ८९, १४४...** इस अनुक्रम में प्रत्येक संख्या अपने पूर्व की दो संख्याओं का योग होती है। सूत्र: Fn = F(n−१) + F(n−२) जहाँ F०=०, F१=१. जैसे-जैसे यह अनुक्रम बढ़ता है, क्रमागत संख्याओं का अनुपात **स्वर्ण अनुपात (Ø ≈ १.६१८)** के समीप पहुँचता है — **यही कारण है कि** यह स्वाभाविक रूप से संतुलित और सौंदर्यपूर्ण प्रतीत होता है।

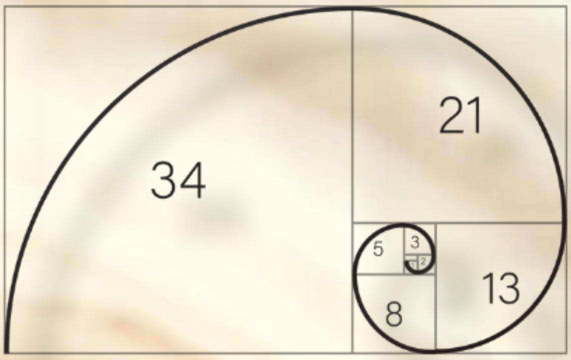

यह संतुलन, सौंदर्य और विकास की अनुभूति प्रदान करता है। हम इसे पुष्पों में, आकाशगंगाओं में, देवदार की फलियों में, चक्रवातों में, गुणसूत्र की संरचना में, भवनों की रचना में, और मानव मुखाकृति में देखते हैं। **वित्तीय क्षेत्र में,** फिबोनाच्ची पैटर्न व्यापारियों को मूल्य के मोड़ बिंदुओं की पहचान करने और बाज़ार के उतार-चढ़ाव का पूर्वानुमान लगाने में सहायता करते हैं।

संस्कृत काव्य से प्रस्फुटित

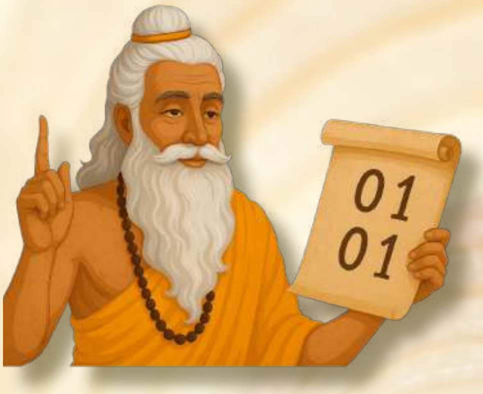

आश्चर्यजनक रुप से, यह संरचना केवल भौतिक जगत तक सीमित नहीं है — यह **भाषा और काव्य** में भी प्रकट होती है। हज़ारों वर्ष पूर्व, **महर्षि पिंगल** ने इस ब्रह्मांडीय लय को प्रकृति के रुप में नहीं, बल्कि छन्दों की गणना में उद्घाटित किया। अपने ग्रंथ **‘छन्द:शास्त्र’** में उन्होंने **लघु** और **गुरु** मात्राओं के माध्यम से एक द्वैतीय प्रणाली जैसी संरचना प्रस्तुत की — जिनके संयोजन आज के ‘फिबोनाच्ची संख्याओं’ से मेल खाते हैं।“**मिश्रौ च**” — “दोनों मिश्रित हैं” — यह रहस्यमयी सूत्र काव्य, गणित और ब्रह्मांड में प्रतिध्वनित होता है। **यह केवल एक श्लोक नहीं था — यह एक कलन विधि थी।**

छन्द- लय के द्रष्टा

फिबोनाच्ची की पुस्तक **‘लिबर अबाची’ (१२०२)** से कई शताब्दियों पूर्व, **महर्षि पिंगल** — और उनके पश्चात **महर्षि विरहांक** तथा **हेमचंद्र** — ने संस्कृत छन्दों के माध्यम से इस अनुक्रम को पहले ही परिभाषित कर दिया था। आधुनिक विद्वान अब इन ऋषियों को द्वैतीय तर्क (binary logic) और पुनरावृत्त संरचनाओं (recursive patterns) के प्रारंभिक प्रवर्तक के रूप में मान्यता देते हैं — यह उद्घाटित करता है कि भारतीय छन्दशास्त्र ने उस गणितीय अंतर्दृष्टि को पहले ही संहिताबद्ध कर लिया था, जिसे पश्चिम में बहुत बाद में पहचाना गया।

ऋषि	योगदान
महर्षि पिंगल	‘छन्द:शास्त्र’ में द्वैतीय तर्क (binary logic) और पुनरावृत्त छन्द संरचना की स्थापना की।
महर्षि विरहांक	छन्दों में संरचना निर्माण को विस्तार दिया; मात्राओं की वृद्धि को क्रमबद्ध रूप में दर्शाया।
आचार्य हेमचंद्र	फिबोनाच्ची से शताब्दियों पूर्व पूर्ण संख्यात्मक अनुक्रम को परिभाषित किया।

ज्ञानदीप की विरासत

जहाँ पश्चिम ने इसे नाम दिया, वहाँ भारत ने इसे जन्म दिया। **महर्षि पिंगल की दृष्टि** केवल आध्यात्मिक छन्द नहीं थी — यह एक **गणितीय अन्वेषण** भी थी। उनके सूत्रों ने ब्रह्मांडीय लय को काव्य से जोडा। इससे सिद्ध होता है कि, **ऋषि केवल तारों को देखके मंत्र उच्चारित नहीं करते थे... वे उन्हें समझते थे।**

महर्षि पराशर

॥ पराशरं नमस्यामि विष्णुपुराणवक्तारम् । ज्योतिषशास्त्रसंस्थापकं ब्रह्मर्षिं ज्ञानदायकम् ॥

मैं महर्षि पराशर को प्रणाम करता हूँ – जो विष्णु पुराण के वक्ता हैं, ज्योतिष शास्त्र के संस्थापक हैं, और दिव्य ज्ञान प्रदान करने वाले ब्रह्मर्षि हैं।

मार्च : फाल्गुन-चैत्र

सोम	प्रदोष शु द्वादशी **30**	फाल्गुन चौमासी चौदस शु चतुर्दशी **02**	कृ षष्ठी **09**	प्रदोष कृ द्वादशी **16**	मासिक कार्थिगाई **लक्ष्मी पंचमी** शु पंचमी **23**
मंगल	**महावीर जयंती** शु त्रयोदशी **31**	**होलिका दहन** **पूर्णिमा** **चैतन्य महाप्रभु जयंती** अन्वाधान फाल्गुन अष्टाह्निका समाप्त **पूर्ण चंद्र ग्रहण** मासी मगम **अट्टुकुल पोंगल** **लक्ष्मी जयंती** पूर्णिमा **03**	शीतल सप्तमी कृ सप्तमी **10**	मासिक शिवरात्रि कृ त्रयोदशी **17**	**यमुना छट** रोहिणी व्रत स्कंद षष्ठी शु षष्ठी **24**
बुध		**पूर्णिमंत चैत्र* उत्तर** इष्टि **होली** कृ प्रतिपदा **04**	**बसोड़ा** कलाष्टमी मासिक जन्माष्टमी वर्षी तप आरम्भ शीतल अष्टमी कृ अष्टमी **11**	अन्वाधान कृ चतुर्दशी **18**	चैत्र नवपाद ओली प्रारंभ शु सप्तमी **25**
गुरु		**भाई दूज** **भ्रातृ द्वितीया** कृ द्वितीया **05**	कृ नवमी **12**	**चैत्र** **अमावस्या** इष्टि **गुडी पड़वा, उगादि** **चैत्र नवरात्रि** अमावस्या, शु प्रतिपदा **19**	मासिक दुर्गाष्टमी **महातारा जयंती** शु अष्टमी **26**
शुक्र		संकष्टी **छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती तिथि*** कृ तृतीया, कृ चतुर्थी **06**	कृ दशमी **13**	**झूलेलाल जयंती** **वसंत विषुव** शु द्वितीया **20**	**श्री राम नवमी** 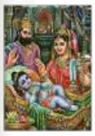 शु नवमी **27**
शनि		कृ चतुर्थी **07**	**करदल्यान नोम्बू** कृ दशमी **14**	**गणगौर** **गौरी पूजा** **मत्स्य जयंती** शु तृतीया **21**	शु दशमी **28**
रवि	प्रदोष शु त्रयोदशी **01**	**रंग पंचमी** कृ पंचमी **08**	**पापमोचनी एकादशी** मीन संक्रांति कृ एकादशी **15**	**विनायक चतुर्थी** शु चतुर्थी **22**	**कामदा एकादशी** शु एकादशी **29**

देवर्षि नारद मुनि

लय, ज्ञान और भक्ति के ऋषिराज

देवर्षि नारद मुनि ब्रह्मदेव के मानसिक पुत्र हैं, जैसे कि चार कुमार, और उन्हें देवी सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त है। महर्षि नारद मुनि भारतीय परंपरा में सबसे अधिक पूजनीय ऋषियों में से एक हैं। श्रीमद्भागवतम् में उनका उल्लेख श्री हरि विष्णु के २४ अवतारों में किया गया है। वे केवल एक ऋषि नहीं हैं; वे **भगवत-स्वरूप** हैं — दिव्य इच्छा के सजीव प्रतिरूप। वे युगों, कल्पों और इनसे भी परे प्रकट होते हैं — धर्म के अनुसार मार्गदर्शन करते हैं और धर्म की रक्षा करते हैं। **'नारायण नारायण'** का जाप करते हुए, वे **स्वर्ग, पृथ्वी** और **पाताल**— तीनों लोकों में दिव्य ज्ञान, संगीत और समाचार लेकर निरंतर यात्रा करते हैं।

शाश्वत ज्ञान

देवर्षि नारद मुनि एक **त्रिकाल ज्ञानी** हैं, जिनका ज्ञान लोकों, शास्त्रों और दर्शनों में विस्तृत है। उनकी बुद्धि अत्यंत विशाल है, उनकी दृष्टि सूक्ष्म और सटीक है, और उनकी भक्ति अखंड एवं अचल है।

- **तीनों लोकों के ज्ञाता:** पृथ्वी, देवलोक और पाताल में बिना किसी वाहन के स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं।
- **चौंसठ विद्याओं के आचार्य:** संगीत, खगोलशास्त्र, धर्म, तर्क, योग और आध्यात्मिक विज्ञानों में पारंगत।
- **सभी शास्त्रों में निपुण:** वेद, उपनिषद, पुराण और इतिहास में पूर्ण रूप से प्रवीण।
- **दार्शनिक प्रतिभा:** न्याय, सांख्य, योग और धर्मशास्त्र में गहन ज्ञान।
- **दैविक वाद-विवादकर्ता:** गुरु बृहस्पति जैसे विद्वानों से भी तर्क करने में सक्षम।
- **नीतिज्ञ ऋषि:** तर्क, कूटनीति और विपरीत दृष्टिकोणो में सामंजस्य बनाने में दक्ष।

- **सनत्कुमार के शिष्य:** उनसे भूम विद्या (शाश्वत ब्रह्म) का ज्ञान प्राप्त किया।
- **भक्ति सूत्र के रचयिता:** उनकी शिक्षाएँ वैष्णव भक्ति की आधारशिला हैं।
- **आध्यात्मिक उत्प्रेरक:** दिव्य लीलाओं को गति देते हैं और कर्म ऋणों का समाधान करते हैं।
- **आत्मा के परिवर्तक:** मृगारी जैसे शिकारी को संत में परिवर्तित किया।
- **ब्रह्मांडीय संवाददाता:** देवता, राक्षस और मनुष्यों को दिव्य सत्यों से जोड़ते हैं।
- **वंशत्यागी संन्यासी:** ब्रह्मदेव द्वारा बुलाए जाने पर सांसारिक कर्तव्यों के स्थान पर भक्ति का वरण किया।
- **'भगवत-स्वरूप' की उपाधि धारक:** यह दुर्लभ सम्मान दिव्य चेतना का प्रतीक है।

दूत से परे : नारद मुनि के विविध रूप

भूमिका	उदाहरण	प्रभाव
गुरु	ध्रुव जी, प्रह्लाद जी, महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वेदव्यास जी	साधकों को ऋषियों में रूपांतरित किया
ज्ञानी	भूत, भविष्य और वर्तमान को जानते हैं	जन्म-जन्मांतर के कर्म-संकल्प पूर्ण करते हैं
शिष्य	सदा 'नारायण नारायण' का जप करते हैं	विनम्रता और भक्ति के मूर्त रूप हैं
धर्म प्रेरक	कंस को चेताया, रुक्मिणी को मार्गदर्शन दिया	दिव्य लीलाओं को गति प्रदान करते हैं
ग्रंथकार	भक्ति सूत्र	भक्ति दर्शन की आधारशिला

उनका ज्ञान शाश्वत, सार्वभौमिक और मोक्षदायक है — आज के समय में जो भ्रामक चित्रण प्रचलित हैं, उनसे कहीं परे। महर्षि नारद मुनि को केवल एक घुमक्कड़ या चंचल पात्र के रूप में देखना, उस ब्रह्मांडीय तेज को अनदेखा करना है जो काल से परे देखते हैं, सदैव सत्य का उद्घोष करते हैं, और धर्म की सेवा दिव्य सूक्ष्मता से करते हैं। वे केवल हमारी कथाओं का भाग नहीं हैं — वे उनके प्रकट होने का कारण हैं।

महर्षि व्यासदेव

॥ व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे । नमो वै ब्रह्मनिधये वाशिष्ठाय नमो नमः ॥

मैं महर्षि व्यासदेव को प्रणाम करता हूँ – जो श्रीहरि विष्णु के रूप हैं, और श्रीहरि विष्णु जिन्होंने व्यास रूप धारण किया। जो महर्षि वशिष्ठ की वंश परंपरा में उत्पन्न हुए, और दिव्य ज्ञान के भंडार हैं। मैं उन्हें बारंबार प्रणाम करता हूँ।

अप्रैल : चैत्र-वैशाख

सोम		कृ चतुर्थी 06	वल्लभाचार्य जयंती वरूथिनी एकादशी कृ एकादशी 13	विनायक चतुर्थी मातंगी जयंती रोहिणी व्रत शु तृतीया, शु चतुर्थी 20	त्रिशुर पूरम मोहिनी एकादशी शु एकादशी 27
मंगल		कृ पंचमी 07	सोलर नववर्ष पुथंडू बैशाखी मेष संक्रांति कृ द्वादशी 14	आदि शंकराचार्य जयंती सूरदास जयंती शु पंचमी 21	प्रदोष शु द्वादशी 28
बुध	पंगुनी उथीराम अन्वाधान शु चतुर्दशी 01	कृ षष्ठी 08	विषु कानी प्रदोष पोहेला बोइशाख मासिक शिवरात्रि कृ त्रयोंदशी 15	रामानुज जयंती स्कंद षष्ठी शु षष्ठी 22	शु त्रयोंदशी 29
गुरु	हनुमान जनमोंत्सव पूर्णिमा इष्टि चैत्र नवपाद ओली समाप्त पूर्णिमा 02	मासिक जन्माष्टमी कृ सप्तमी 09	कृ चतुर्दशी 16	गंगा सप्तमी शु सप्तमी 23	नृसिंह जयंती छिन्नमस्ता जयंती शु चतुर्दशी 30
शुक्र	पूर्णिमंत वैशाख* उत्तर कृ प्रतिपदा 03	कालाष्टमी कृ अष्टमी 10	अमावस्या अन्वाधान अमावस्या 17	मासिक दुर्गाष्टमी बगलामुखी जयंती शु अष्टमी 24	
शनि	कृ द्वितीया 04	कृ नवमी 11	वैशाख इष्टि शु प्रतिपदा 18	सीता नवमी शु नवमी 25	
रवि	संकष्टी कृ तृतीया 05	कृ दशमी 12	अक्षय तृतीया मासिक कार्थिगाई वर्षी तप पारण परशुराम जयंती शु द्वितीया, शु तृतीया 19	महावीर स्वामी कैवल्य ज्ञान शु दशमी 26	

भाषाई अभियांत्रण की एक उत्कृष्ट कृति: ‘अष्टाध्यायी’

महर्षि पाणिनि प्राचीन भारत के एक **संस्कृत व्याकरणाचार्य** थे, जिनका जन्म शलातुर में हुआ था — जो आज के पाकिस्तान या अफगानिस्तान क्षेत्र में स्थित है। उन्हें ‘भाषाशास्त्र के जनक’ के रूप में सम्मानित किया जाता है। वे **‘अष्टाध्यायी’** के रचयिता हैं — एक मूलग्रंथ जो संस्कृत व्याकरण को अद्वितीय सूक्ष्मता और वैज्ञानिक विधि से संहिताबद्ध करता है।

अष्टाध्यायी क्या है ?

- **नाम का अर्थ: ‘अष्टाध्यायी’** का अर्थ है **‘आठ अध्याय’** — यह ग्रंथ आठ खंडों में विभाजित है, जिनमें अनेक व्याकरणिक नियम समाविष्ट हैं।
- **संरचना:** इसमें ४००० से अधिक संक्षिप्त सूत्र (सूक्तियाँ) हैं, जो संस्कृत की ध्वनियों, रुप-रचना और वाक्य-विन्यास को परिभाषित करते हैं।
- **उद्देश्य:** यह संस्कृत व्याकरण को इतनी सूक्ष्मता से व्यवस्थित करता है कि मूल शब्दों और प्रत्ययों से व्याकरणिक रूप से शुद्ध शब्द और वाक्य उत्पन्न किए जा सकते हैं।
- **पद्धति:** इसमें अत्यंत गणनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है — नियम एक विशेष क्रम में लागू होते हैं, और प्रतिस्पर्धी व्याकरणिक नियमों के बीच टकराव को सुलझाने के लिए मेटा-नियम भी विद्यमान हैं।

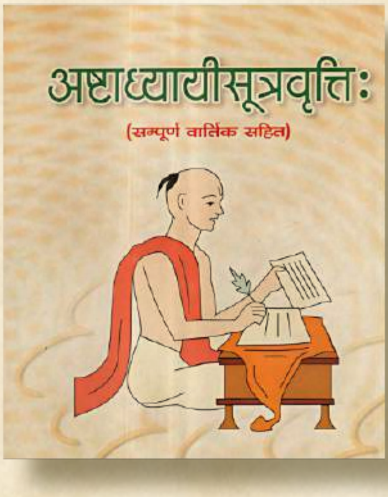

यह इतना अभूतपूर्व क्यों है ?

- यह एक **अनुप्रेषणीय भाषा (प्रोग्रामिंग लेंगवेज)** के समान प्रतीत होती है; इसकी औपचारिक कठोरता के लिए प्रशंसित है।
- **मेटा-नियम:** यह नियमों के आपसी संबंधों को नियंत्रित करता है — व्याकरण का व्याकरण।
- **विरासत:** इसने व्याकरणाचार्यों, दार्शनिकों और कवियों को प्रेरित किया है; आज भी संस्कृत शिक्षण में प्रयुक्त होता है।
- **वैश्विक प्रभाव:** इसे भाषाई चमत्कार और औपचारिक प्रणालियों का पूर्वज माना गया है; यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है।

विद्वत्-चिंतन

जॉर्ज कार्डोना, प्रतिष्ठित भाषाविज्ञानी और संस्कृत विद्वान: “पाणिनि कंप्यूटर न होते हुए भी एक कंप्यूटर वैज्ञानिक की तरह लगते हैं।”

नोम चॉम्स्की, आधुनिक भाषाविज्ञान के जनक: उन्होंने ‘अष्टाध्यायी’ को पहली जनरेटिव व्याकरण कहा; उनकी स्वयं की सिद्धांतों में पाणिनि की सूक्ष्मता की प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

आर. के. श्यामसुंदर, भारत के अग्रणी कंप्यूटर वैज्ञानिक: पाणिनि की प्रणाली की तुलना प्रोग्रामिंग में प्रयुक्त बैकस-नॉर रूप से की।

आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के समकक्ष

क्षेत्र	तुलना
कंप्यूटर विज्ञान	सूत्र प्रोग्रामिंग निर्देशों की तरह कार्य करते हैं; यह प्रणाली कंपाइलर डिज़ाइन का प्रतिबिंब है।
कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence)	संस्कृत की तार्किक संरचना प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) के लिए आदर्श है।
गणित	इसमें पुनरावृत्ति, प्रतीकात्मक निरूपण, और नियमों की प्राथमिकता का प्रयोग होता है — जो एल्गोरिदमिक चिंतन की विशेषताएँ हैं।
भाषाविज्ञान	यह सबसे प्राचीन जननात्मक व्याकरण है, जो चॉम्स्की से हज़ारों वर्ष पूर्व अस्तित्व में था।

परंपरा का अविरत प्रवाह

महर्षि कात्यायन ने महर्षि पाणिनि की व्याकरण को तीक्ष्णता प्रदान की, और **महर्षि पतंजलि** ने उसे चिंतन और भाष्य के माध्यम से गहराई दी। उनके कार्यों ने भाषाई विश्लेषण की एक स्थायी परंपरा की स्थापना की। महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी आज भी एक शाश्वत उत्कृष्ट कृति बनी हुई है — जो प्राचीन ज्ञान और आधुनिक गणनात्मक प्रणाली के बीच एक सेतु है।

महर्षि विश्वामित्र

॥ विश्वामित्रं नमस्यामि तपःशक्तिपरायणम् । गायत्रीमन्त्रदातारं ब्रह्मर्षिं च महात्मनम् ॥

मैं महर्षि विश्वामित्र को प्रणाम करता हूँ – जो तप और दिव्य शक्ति के प्रतीक हैं,
गायत्री मंत्र के प्रदाता हैं, और महान आत्मा वाले ब्रह्मर्षि हैं।

मई : वैशाख-ज्येष्ठ

सोम		कृ तृतीया **04**	कृ नवमी **11**	रोहिणी व्रत शु द्वितीया **18**	गंगा दशेरा शु दशमी **25**
मंगल		संकष्टी कृ चतुर्थी **05**	हनुमान जयंती तेलुगू* कृ दशमी **12**	शु तृतीया **19**	शु एकादशी **26**
बुध		कृ चतुर्थी **06**	अपरा एकादशी कृ एकादशी **13**	विनायक चतुर्थी शु चतुर्थी **20**	पद्मिनी एकादशी शु एकादशी **27**
गुरु		कृ पंचमी **07**	प्रदोष कृ द्वादशी **14**	स्कंद षष्ठी शु पंचमी, शु षष्ठी **21**	प्रदोष शु द्वादशी **28**
शुक्र	बुद्ध पूर्णिमा पूर्णिमा कूर्म जयंती अन्वाधान पूर्णिमा **01**	कृ षष्ठी **08**	मासिक शिवरात्रि वृषभ संक्रांति कृ त्रयोदशी, कृ चतुर्दशी **15**	शु सप्तमी **22**	शु त्रयोदशी **29**
शनि	पूर्णिमंत ज्येष्ठ* (अधिक मास) उत्तर इष्टि नारद मुनि जयंती कृ प्रतिपदा **02**	कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी कृ सप्तमी **09**	वट सावित्री अमावस्या शनि जयंती अन्वाधान मासिक कार्थिगाई अमावस्या **16**	मासिक दुर्गाष्टमी शु अष्टमी **23**	वैकासी विसाकम् शु चतुर्दशी **30**
रवि	कृ द्वितीया **03**	कृ अष्टमी **10**	ज्येष्ठ (अधिक मास) इष्टि शु प्रतिपदा **17**	शु नवमी **24**	पूर्णिमा अन्वाधान पूर्णिमा **31**

गोत्र: एक आध्यात्मिक गुणसूत्रीय-संरचना

आज अधिकांश लोग अपना गोत्र तक नहीं जानते।

अनेक लोग इसे केवल एक पंक्ति मानते हैं, जिसे पुरोहित यज्ञ या संस्कारों के समय उच्चारित करते हैं — परंतु इसका अर्थ कहीं अधिक गहरा है। **गोत्र** सनातन परंपरा में पहचान का सबसे प्राचीन चिन्ह है — जाति, उपनाम या राज्य से भी पुराना।

यह शाश्वत वंश परंपरा ऋग्वेद से प्रारंभ होती है — सप्तर्षियों से, उन सात महान ऋषियों से जिन्होंने ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आध्यात्मिक दृष्टि का मार्ग प्रकाशित किया। संस्कृत में गोत्र का अर्थ है एक **पवित्र उत्तराधिकार** — एक अविच्छिन्न पुरुष वंश जो एक वैदिक ऋषि तक पहुँचता है, उन द्रष्टाओं तक जिनकी ज्ञान-चेतना ने धर्म की नींव को आकार दिया।

अपने ऋषि से संबंध

गोत्र केवल गुणसूत्र (DNA) का विषय नहीं है।

यह आपके पूर्वजों के विचार, स्पंदन, ज्ञान और चेतना से जुड़ा एक संबंध है। प्रत्येक गोत्र अपने मूल ऋषि के नाम को वहन करता है — एक **प्रबुद्ध ऋषि**, जिनके गुण आज भी आपके भीतर प्रतिध्वनित होते हैं।

उदाहरण: **वशिष्ठ गोत्र — महर्षि वशिष्ठ** से जुड़ा है, जो श्रीराम के मार्गदर्शक थे। **भृगु गोत्र — भृगु ऋषि** से जुड़ा है जिन्होंने वेदों को आकार दिया और योद्धाओं को शिक्षित किया।

संस्कृति में ४९ प्रमुख गोत्र हैं — प्रत्येक उन ऋषियों से जुड़ा है जो वैद्य, योद्धा, मंत्रद्रष्टा, खगोलशास्त्री या प्राकृतिक वैज्ञानिक थे।

गोत्र आपकी आत्मा का मार्गदर्शक यंत्र (GPS)

यह आपको मार्ग दिखाता है:

- » उपयुक्त मंत्र
- » उपयुक्त आध्यात्मिक साधना
- » उपयुक्त विवाह-साम्यता
- » उपयुक्त जीवन-पथ

यह आपकी आध्यात्मिक कुंजी की तरह भी है, जो खोलती है:

- » आपकी चेतना
- » आपका कर्म-स्मृति इतिहास

गोत्र प्रणाली कैसे विलुप्त हो रही है ?

गोत्र प्रणाली का पालन सृष्टि के प्रारंभ से ही होता आया है। ब्रिटिश शासनकाल में इसे अंधविश्वास कहकर खारिज कर दिया गया। बाद में आधुनिक सिनेमा ने इसका उपहास किया। यह परंपरा कभी नष्ट नहीं हुई — हमने केवल इसका पालन करना बंद कर दिया।

हिमालयन मेडिटेशन

गोत्र प्रणाली के वैज्ञानिक कारण

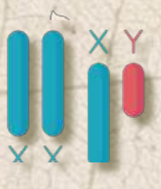

१. **पुरुष वंश की निरंतरता-** पुरुष (XY) अपने पिता से Y गुणसूत्र प्राप्त करते हैं और यह फिर उनसे उनके पुत्रों को प्राप्त होता है। स्त्रियाँ (XX) में Y गुणसूत्र नहीं होता, अतः पुरुष वंश को सहस्त्राब्दियों तक अनुसरण किया जा सकता है।

२. **अंतर विवाह की रोकथाम-** एक ही गोत्र- सामान्य पुरुष पूर्वज। सगोत्र विवाह से गुप्त आनुवंशिक दोषों के कारण विकृति की संभावना बढ़ती है। प्राचीन नियम आधुनिक आनुवंशिक परामर्श की तरह कार्य करते थे।

३. **आनुवंशिक विविधता** को बढ़ावा देने के लिए गोत्र के बाहर विवाह (exogamy) को प्रोत्साहित करते हैं जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली और स्वास्थ्य सशक्त होते हैं।

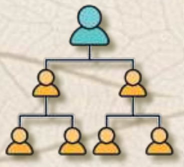

४. **एक वंश-डेटाबेस का संरक्षण** - गोत्र मौखिक वंशावली का रूप है जो बिना लिखे ही वंश-सूचना को संरक्षित करता है। यह सही जीवनसाथी के चयन में मार्गदर्शन करता है। यह एक प्राचीन डेटाबेस है।

गोत्र प्रणाली का जतन

गोत्र केवल एक परंपरा नहीं — यह आपके गुणसूत्र, आध्यात्मिक विरासत और सांस्कृतिक पहचान के बीच एक सेतु है। जब आप अपने गोत्र को जानते और संरक्षित करते हैं, तो आप उस ज्ञान-ज्योति को आगे बढ़ाते हैं जो अनगिनत पीढ़ियों से प्रवाहित होती आई है।

अपने वरिष्ठजन से अपना गोत्र पूछिये, और गोत्र प्रणाली का जतन कीजिए

यदि हम अपना गोत्र भुला देते हैं, तो हम उस वृक्ष की तरह हो जाते हैं जो अपनी ही जड़ों को काट रहा है।

महर्षि अंगिरा

॥ अङ्गिरसां वन्दे सदा ऋग्वेदमन्त्रदर्शिनः । अग्निस्वरूपं ज्ञानं च यैः प्राप्तं तपसा महत् ॥

मैं महर्षि अङ्गिरा को सदा वंदन करता हूँ – जो ऋग्वेद के मंत्रों के द्रष्टा हैं,
जिन्होंने महान तपस्या द्वारा अग्नि स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति की।

जून : ज्येष्ठ-आषाढ़

सोम	पूर्णिमंत ज्येष्ठ* उत्तर इष्टि कृ प्रतिपदा **01**	कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी कृ अष्टमी **08**	ज्येष्ठ अधिक मास समाप्त **अमावस्या** इष्टि **ज्येष्ठ** मिथुन संक्रांति अमावस्या, शु प्रतिपदा **15**	मासिक दुर्गाष्टमी धूमावती जयंती शु अष्टमी **22**	वट पूर्णिमा व्रत पूर्णिमा अन्वाधान कबीरदास जयंती पूर्णिमा **29**
मंगल	कृ द्वितीया **02**	कृ नवमी **09**	शु द्वितीया **16**	शु नवमी **23**	पूर्णिमंत आषाढ़* उत्तर इष्टि कृ प्रतिपदा **30**
बुध	संकष्टी कृ तृतीया, कृ चतुर्थी **03**	कृ दशमी **10**	महाराणा प्रताप जयंती शु तृतीया **17**	शु दशमी **24**	
गुरु	कृ चतुर्थी **04**	परमा एकादशी कृ एकादशी **11**	विनायक चतुर्थी शु चतुर्थी **18**	निर्जला एकादशी शु एकादशी **25**	
शुक्र	कृ पंचमी **05**	प्रदोष कृ द्वादशी **12**	स्कंद षष्ठी शु पंचमी **19**	शु द्वादशी **26**	
शनि	कृ षष्ठी **06**	मासिक शिवरात्रि मासिक कार्थिगाई कृ त्रयोंदशी **13**	शु षष्ठी **20**	प्रदोष शु त्रयोंदशी **27**	
रवि	कृ सप्तमी **07**	अन्वाधान रोहिणी व्रत कृ चतुर्दशी **14**	वर्ष का सबसे बड़ा दिवस भानु सप्तमी योग दिवस शु सप्तमी **21**	शु चतुर्दशी **28**	

कटपयादि प्रणाली

श्लोकों में छिपा पासवर्ड

कटपयादि प्रणाली – एक दृष्टि में

कटपयादि प्रणाली प्राचीन भारत की एक अद्भुत विधि है, जिसमें संस्कृत अक्षरों के माध्यम से संख्याओं को लिपिबद्ध किया जाता है। इसका श्रेय परंपरागत रुप से **ऋषि वररुचि** को दिया जाता है। यह प्रणाली बड़े संख्यात्मक मानों को पद्य या गद्य के रूप में स्मरण करने का एक सरल और प्रभावशाली उपाय प्रदान करती है।

- इस प्रणाली का नाम उन अक्षरों से लिया गया है जो संख्या १ से संबंधित हैं — **क, ट, प, य**। **'आदि'** का अर्थ संस्कृत में **अन्य या इत्यादि** होता है।
- कटपयादि प्रणाली का प्रयोग प्राचीन भारत में **खगोलशास्त्र** और **गणित** में श्लोकों के माध्यम से संख्याओं को लिपिबद्ध करने के लिए किया जाता था। आज यह प्रणाली डेटा संपीड़न (data compression) और प्रतीकात्मक एन्कोडिंग (symbolic encoding) के संदर्भ में भी अध्ययन की जा रही है। जॉर्ज कार्डोना जैसे भाषाविदों और IIT कानपुर जैसे संस्थानों ने इसके गणनात्मक और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित किया है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
क	ख	ग	घ	ड	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म					
य	र	ल	व	श	ष	स	ह		

नियम

» व्यंजन १ से ९ तक के अंकों का प्रतिनिधित्व करते हैं , जिन्हें ध्वनि- समूहों के अनुसार वर्गीकृत किया गया है।

» स्वरों का कोई मान नहीं होता : उन्हें अनदेखा किया जाता है और केवल उच्चारण योग्य शब्दांश बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।

» अंकों को दाएँ से बाएँ पढ़ा जाता है : पहला शब्दांश अंतिम अंक देता है , और इसी क्रम में आगे बढ़ता है।

» संयुक्ताक्षर में अंतिम व्यंजन ही गिना जाता है (उदाहरण : ज्ञ = ज् + ञ = गिनें ञ, त्र = त् + र = गिनें र) ।

» संयुक्त शब्दों में प्रत्येक शब्दांश को अलग विश्लेषित किया जाता है (उदाहरण : भक्ति = भ (४), क्त = क् + त = गिनें त (६) = ६४)

» कुछ अक्षर जैसे अ, ऋ और ञ को शून्य माना जाता है या संदर्भ के अनुसार अनदेखा किया जाता है।

π का मान : । भद्राम्बुद्धिसिद्धजन्मगणितश्रद्धा स्म यद् भूपगीः ।

विभाजन	भ	द्	रा	म्	बु	द्	धि	सि	द्	ध	ज	न्	म	ग	णि	त	श्	र	द्	धा	स्	म	य	द्	भू	प	गी
संबंध	भ	र		ब		ध		स	ध		ज	म		ग	ण	त	र		ध		म		य	भ		प	ग
अंक	४	२		३		९		७	९		८	५		३	५	६	२		९		५		१	४		१	३

अंकों को दाएँ से बाएँ पढ़ें — पहला शब्दांश अंतिम अंक देता है। ▫

क ट प या दि संख्या

३१४१५९२६५३८९७९३२४

अधिक जानने के लिए: आप कटपयादि प्रणाली को प्रयोग में लाकर शब्दों को संख्याओं में बदलने या संख्याओं को संस्कृत शब्दों में ढालने के लिए IIT कानपुर द्वारा विकसित कटपयादि डिकोडर का उपयोग कर सकते हैं।

श्लोक / वाक्यांश	संख्यात्मक मान	गणित, खगोल, संगीत, साहित्य में अनुप्रयोग
नानाज्ञानतपोधरिः	१,९१,६०,०००	त्रिज्या, विभाजन, गुणा आदि गणनाओं में उपयोग
अज्ञानतन्त्रे नव त्त्वसंश्रियः	१,७४,४०,००,०००	विशाल संख्या को सांकेतिक रूप में दर्शाने हेतु
अनंतपुरम्	२१,६००	खगोलशास्त्र में ग्रहों की स्थिति दर्शाने हेतु
सनचव	४६०७	क्षेत्रीय संयोगों की खगोल गणना में उपयोग
श्रेष्ठं नाम वरिष्ठानां – हिमाद्रिर्वेदभावनः – तपनो भानुसूक्तज्ञो – मध्यमं विद्धि दोहनम्	कोणों के R-साइन मान (३.७५, ७.५, ११.२५, १५ आदि) — आर्क-मिनट, आर्क-सेकंड, थर्ड्स	खगोल गणना में त्रिकोणमितीय साइन के स्मृति सूत्र (माधव की साइन तालिका के प्रथम ६ श्लोक)
कनकाङ्गी,रुपवती,षण्मुखप्रिया,रसिकप्रिया	३२०१, ६४१२, १२२५६, १२२७२	कर्नाटिक संगीत में मेलकर्ता राग — 'क-न', 'रु-प', 'षण-मु', 'र-सि' के माध्यम से संख्यात्मक तालिका

कृपया स्वयं एक अन्य श्लोक को π (पाई) के मान के लिए डिकोड करने का प्रयास करें।

गोपीभाग्य मधुव्रातः श्रुंगशोदधि संधिगः।
खलजीवितखाताव गलहाला रसंधरः।।

यह मात्र संयोग नहीं है।

वैदिक श्लोक केवल उच्चारण के लिए नहीं हैं — वे प्रायः गहन वैज्ञानिक और आध्यात्मिक सत्य को छिपाए रहते हैं। इन रहस्यों को उजागर करने के लिए हमें भारतीय ग्रंथों का अधिक गहराई से अध्ययन जारी रखना होगा।

महर्षि क्रतु

॥ क्रतवे नमः सततं यज्ञपुरुषस्वरुपिणे । वालखिल्यपितुं वन्दे ब्रह्मर्षिं ज्ञानविभ्रमम् ॥

मैं महर्षि क्रतु को सतत प्रणाम करता हूँ – जो यज्ञपुरुष के स्वरूप हैं,
महर्षि वालखिल्य के पिता हैं, और गहन ज्ञान से संपन्न ब्रह्मर्षि हैं।

जुलाई : आषाढ़-श्रावण

सोम		कृ षष्ठी **06**	कृ चतुर्दशी **13**	आषाढ़ अष्टाह्निका प्रारंभ शु सप्तमी **20**	**जय पार्वती व्रत प्रारंभ** शु त्रयोंदशी **27**
मंगल		कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी कृ सप्तमी **07**	**अमावस्या** अन्वाधान अमावस्या **14**	मासिक दुर्गाष्टमी शु अष्टमी **21**	आषाढ़ चौमासी चौदस **कोकिला व्रत** शु चतुर्दशी **28**
बुध	कृ प्रतिपदा **01**	कृ अष्टमी **08**	**आषाढ़** इष्टि **आषाढ़ नवरात्रि** शु प्रतिपदा **15**	शु नवमी **22**	**गुरु पूर्णिमा व्यासदेव पूजा** **पूर्णिमा** अन्वाधान गौरी व्रत आषाढ़ अष्टाह्निका समाप्त पूर्णिमा **29**
गुरु	कृ द्वितीया **02**	कृ नवमी **09**	**जगन्नाथ रथ यात्रा** कर्क संक्रांति शु द्वितीया **16**	शु नवमी **23**	**पूर्णिमांत श्रावण* उत्तर** कृ प्रतिपदा **30**
शुक्र	**संकष्टी** कृ तृतीया, कृ चतुर्थी **03**	**योगिनी एकादशी** मासिक कार्थिगाई कृ दशमी, कृ एकादशी **10**	**विनायक चतुर्थी** शु तृतीया, शु चतुर्थी **17**	शु दशमी **24**	कृ द्वितीया **31**
शनि	कृ चतुर्थी **04**	**योगिनी एकादशी** कृ द्वादशी **11**	शु पंचमी **18**	**गौरी व्रत प्रारंभ** **देवशयनी एकादशी** शु एकादशी **25**	
रवि	कृ पंचमी **05**	प्रदोष मासिक शिवरात्रि रोहिणी व्रत कृ त्रयोंदशी **12**	स्कंद षष्ठी शु षष्ठी **19**	प्रदोष शु द्वादशी **26**	

वेदों से चलनचित्रों तक : हॉलीवुड की छिपी प्रेरणाएँ

सिल्वर स्क्रीन पर ब्रह्मांडीय युद्धों और बहु-ब्रह्मांड सिद्धांतों की कहानियाँ प्रदर्शित होने से शताब्दियों पूर्व, प्राचीन महर्षियों ने उन वास्तविकताओं का दर्शन पहले ही कर लिया था। ऐसे सिद्धांतों की झलकियाँ जो आधुनिक सिनेमा भी लेने से डरता है।

महर्षि भरद्वाज और महर्षि वाल्मीकि जैसे ऋषियों ने ऐसे महान आख्यान रचे, जिनमें दैविक नाट्य, बहु-आयामी प्राणी, और आदर्श पात्र समाहित थे — जो हॉलीवुड की मिथक-निर्माण शैली से मिलते-जुलते हैं, परंतु आध्यात्मिक शुद्धता और ब्रह्मांडीय नियमों में गहराई से जड़े हुए हैं।

ये मिथक नहीं थे। ये रूपक नहीं थे। ये सटीक ब्रह्मांडीय मॉडल थे — जो श्लोकों में संहित हैं, और जिनमें गणित, खगोलशास्त्र, तथा आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की परतें समाहित हैं।

हॉलीवुड में सनातन ज्ञान की प्रतिध्वनि

ऋषियों द्वारा कृत श्लोक ब्रह्मांड का ऐसा वर्णन करते हैं जो आश्चर्य से परिपूर्ण है — अनेक **लोक** (dimensions), जिनमें **समय और स्थान** के अपने-अपने नियम हैं; दैविक शक्तियाँ रखने वाले देव-प्राणी, जिनकी क्षमताएँ आधुनिक सुपरहीरो से मेल खाती हैं; और **ब्रह्मास्त्र, नारायणास्त्र** जैसे दिव्य आयुध — जो **प्रकाश और ध्वनि** के माध्यम से संचालित होते थे।

उन्होंने **काल-विलंबन** (time dilation) और **बहु-आयामी यात्रा** (interdimensional travel) की बात की — जैसे राजा ककुद्मी और रेवती की कथा। उन्होंने ब्रह्मांडीय संहार और पुनर्जन्म की अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं — वही विषयवस्तु आज इंटरस्टेलर, डॉक्टर स्ट्रेंज, और द मैट्रिक्स जैसी फिल्मों में प्रतिध्वनित होती है ।

STAR WARS
MATRIX
THE DARK KNIGHT
WATCHMEN
INCEPTION
INTERSTELLAR
DOCTOR STRANGE
AVATAR

- **स्टार वॉर्स (१९७७):** इसमें ‘द फ़ोर्स’ ब्रह्म की तरह है —सर्वव्यापी ऊर्जा, जो सबको जोड़ती है। योडा की शिक्षाएँ गुरु व शिष्य की धर्मनिष्ठ परंपरा की प्रतिध्वनि हैं।
- **द मैट्रिक्स (१९९९):** नीओ का प्रबोधन उस साधक की यात्रा जैसा है जो माया से ऊपर उठकर मोक्ष की ओर बढ़ता है — जैसा बृहदारण्यक उपनिषद में वर्णित है।
- **द डार्क नाइट (२००८):** बैटमैन की छिपी भूमिका भगवान श्रीकृष्ण की धर्म की रक्षा हेतु अदृश्य प्रेरणा व मार्गदर्शन की भांति है।
- **वॉचमेन (२००९):** डॉ. मैनहैटन का वैराग्य और ब्रह्मांडीय चेतना भगवान श्रीकृष्ण के विश्वरूप की याद दिलाती है — विशेषत: गीता की यह पंक्ति: “अब मैं मृत्यु हूँ — संसांर का संहारक।”
- **इन्सेप्शन (२०1०):** सपनों की परतें और समय की गति उपनिषदों की उस अवधारणा को दर्शाती हैं — “ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या” — जीवन स्वयं एक स्वप्न है।
- **इंटरस्टेलर (२०1४):** काल-विलंबन और प्रेम की शक्ति — राजा मुचुकुन्द की युगों को पार करने वाली निष्कलंक भक्ति की स्मृति जगाते हैं।
- **अवतार (२००९):** ना’वी जाति की प्रकृति से एकताा दर्शाती है — “वसुधैव कुटुम्बकम्” की भावना और श्रीहरि विष्णु के अवतारों के सार को।
- **डॉक्टर स्ट्रेंज (२०१६):** उनकी सूक्ष्म यात्रा, आकाशीय द्वारों से गुजरना — योगिक सिद्धि और तांत्रिक–वेदान्तिक तत्त्वज्ञान की प्रतिध्वनि है।

कल्पना नहीं — हमारे ऋषियों ने जो प्रकट किया, वह शाश्वत सत्य है।

हॉलीवुड भले ही सीजीआई (कंप्यूटर-जनरेटेड इमेजरी) से चकाचौंध करता हो, किन्तु जिसे वह विज्ञान कथा के रूप में प्रस्तुत करता है, उसे हमारे ऋषियों ने कालातीत वास्तविकता के रूप में प्रकट किया। महर्षियों ने अक्षरों, सार्वभौमिक ध्वनियों और मौन से संपूर्ण ब्रह्मांड को चित्रित किया। उन्होंने सिद्धांत नहीं गढ़े—उन्होंने तपस्या, ध्यान और समाधि के माध्यम से ब्रह्मांड का प्रत्यक्ष अनुभव किया, उन सत्यों तक पहुंचे जिन्हें आधुनिक विज्ञान आज भी उपकरणों और समीकरणों के माध्यम से खोजता है। भारतीय शास्त्र अतीत के अवशेष नहीं हैं—वे चेतना के जीवंत मानचित्र हैं, जो मन के आंतरिक परिदृश्य और स्थान एवं काल के विशाल विस्तार, दोनों को दर्शाते हैं। उनका ज्ञान अमूर्त नहीं है—यह गहन मानवीय है, जो धर्म और प्रेम के माध्यम से माया और भ्रम से मुक्ति की ओर मार्गदर्शन प्रदान करता है।

हिमालयन मेडिटेशन

महर्षि अत्रि

॥ अत्रये च नमः पुण्ये ब्रह्मनिष्ठे तपस्विनि । दत्तात्रेयपितुं वन्दे त्रिमूर्त्यंशसमुद्भवम् ॥

मैं महर्षि अत्रि को प्रणाम करता हूँ – जो पुण्यवान, ब्रह्मनिष्ठ और तपस्वी हैं,
दत्तात्रेय के पिता हैं, जो त्रिमूर्ति के अंश से उत्पन्न हुए।

अगस्त : श्रावण-भाद्रपद

सोम	कजरी तीज बहुला चतुर्थी संकष्टी कृ तृतीया, कृ चतुर्थी 31	आदि पेरुक्कू कृ पंचमी 03	प्रदोष कृ द्वादशी, कृ त्रयोदशी 10	नाग पंचमी स्कंद षष्ठी सिंह संक्रांति शु पंचमी 17	पुत्रदा एकादशी शु द्वादशी 24
मंगल		पूर्णिमंत प्रथम मंगल गौरी व्रत कृ षष्ठी 04	मासिक शिवरात्रि पूर्णिमंत द्वितीय मंगल गौरी व्रत कृ चतुर्दशी 11	पूर्णिमंत तृतीय मंगल गौरी व्रत अमावस्यांत प्रथम मंगल गौरी व्रत शु षष्ठी 18	प्रदोष पूर्णिमंत चतुर्थ मंगल गौरी व्रत अमावस्यांत द्वितीय मंगल गौरी व्रत शु द्वादशी 25
बुध		कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी कृ सप्तमी 05	पूर्ण सूर्य ग्रहण अमावस्या अन्वाधान अमावस्या 12	तुलसीदास जयंती शु सप्तमी 19	ओणम ऋग्वेद उपकर्म शु त्रयोदशी 26
गुरु		कृ अष्टमी 06	श्रावण इष्टि शु प्रतिपदा 13	मासिक दुर्गाष्टमी शु अष्टमी 20	यजुर्वेद उपकर्म हयग्रीव जयंती अन्वाधान शु चतुर्दशी 27
शुक्र		मासिक कार्थिगाई कृ नवमी 07	आंडाल जयंती शु द्वितीया 14	अगस्त्य अर्घ्य शु नवमी 21	बलराम जयंती पूर्णिमा इष्टि रक्षा बंधन वरलक्ष्मी व्रत गायत्री जयंती चंद्र ग्रहण आंशिक पूर्णिमा 28
शनि	जय पार्वती व्रत समाप्त कृ तृतीया 01	रोहिणी व्रत कृ दशमी 08	स्वतंत्रता दिवस हरियाली तीज शु तृतीया 15	शु दशमी 22	पूर्णिमंत भाद्रपद* उत्तर कृ प्रतिपदा 29
रवि	संकष्टी कृ चतुर्थी 02	कामिका एकादशी कृ एकादशी 09	विनायक चतुर्थी शु चतुर्थी 16	पुत्रदा एकादशी शु एकादशी 23	कृ द्वितीया 30

३३ कोटि या ३३ करोड़ ?

देवता कौन हैं ?

हर योजना के लिए एक श्रेणीबद्ध व्यवस्था आवश्यक होती है — ब्रह्मांड के लिए भी। देवता और देवियाँ ब्रह्मांडीय प्रशासक हैं, जिन्हें भगवान की आराधना और कठोर तपस्या के माध्यम से नियुक्त किया जाता है। उनकी पदानुक्रम उनकी भूमिकाओं को दर्शाती है, और प्रत्येक कल्प में ये स्थान परिवर्तित होते रहते हैं। वर्त्तमान में पुरंदर इंद्रदेव की उपाधि पर नियुक्त हैं; राजा बलि उनके उत्तराधिकारी हैं। दैवी पद स्थायी नहीं होता — कोई भी, यदि उसके पास पर्याप्त पुण्य हो, तो उस पद तक पहुँच सकता है।

कितने देवी और देवता - ३३ कोटि या ३३ करोड़ ?

शास्त्रों में ३३ कोटि देवताओं का उल्लेख मिलता है। लेकिन "कोटि" शब्द का अर्थ संस्कृत में **प्रकार और करोड़** — दोनों होता है, जिससे भ्रम उत्पन्न होता है। परंपरागत रूप से इसका आशय ३३ श्रेणियों से है, न कि ३३ करोड़ व्यक्तिगत देवताओं से जो प्रमुख देवताओं में गिने जाते हैं।

हम आरंभ करते हैं **त्रिदेव से: ब्रह्मा, विष्णु, महेश**; और **त्रिदेवी से: सरस्वती, लक्ष्मी, काली।**

- श्री हरि विष्णु अनेक रूपों में प्रकट होते हैं — तीन विष्णु पुरुष: कारणोदक्षयी, गर्भोदक्षयी, और क्षीरोदक्षयी; तथा चौबीस अवतार।
- त्रिदेवी भी अनेक रूपों में प्रकट होती हैं: **सरस्वती के 12** रूप, **लक्ष्मी के ८** रूप, और **गौरी के 12** रूप। त्रिदेव और त्रिदेवी के ये सभी रुप हमारे ब्रह्मांड से परे स्थित हैं, अतः इन्हें देवताओं की गणना में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

देवताओं की प्रमुख ३३ श्रेणियाँ

आदित्य विश्व वसवस् तुषितभस्वरनीलाः।
महाराजिक-साध्याश् च रुद्राश् च गणदेवताः।

'नामलिङ्गानुशासनम्' के अनुसार, ४०० से अधिक प्रमुख देवता वर्णित हैं — प्रत्येक देवता ब्रह्मांडीय कार्यों, प्राकृतिक शक्तियों, या दैवी भूमिकाओं से संबद्ध हैं, जैसा कि नीचे दिए गए चित्र में दर्शाया गया है

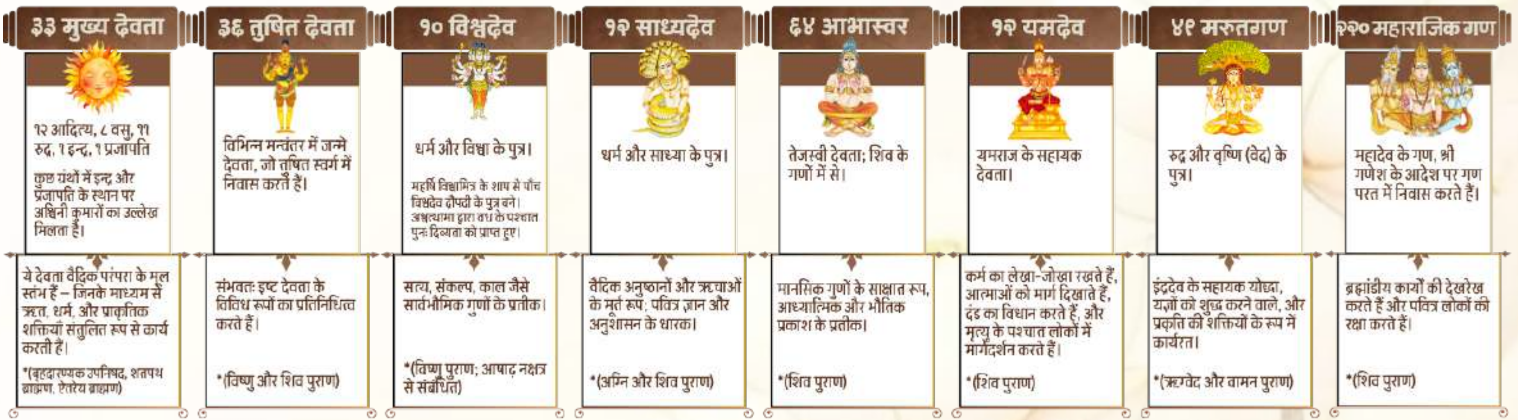

३३ मुख्य देवता	३६ तुषित देवता	१० विश्वदेव	१२ साध्यदेव	६४ आभास्वर	१२ यमदेव	४९ मरुतगण	२२० महाराजिक गण
१२ आदित्य, ८ वसु, ११ रुद्र, १ इन्द्र, १ प्रजापति कुछ ग्रंथों में इन्द्र और प्रजापति के स्थान पर अश्विनी कुमारों का उल्लेख मिलता है।	विभिन्न मन्वंतर में जन्मे देवता, जो तुषित स्वर्ग में निवास करते हैं।	धर्म और विश्वा के पुत्र। महर्षि विश्वामित्र के शाप से पाँच विश्वदेव द्रौपदी के पुत्र बने। अश्वत्थामा द्वारा वध के पश्चात पुनः दिव्यता को प्राप्त हुए।	धर्म और साध्या के पुत्र।	तेजस्वी देवता; शिव के गणों में से।	यमराज के सहायक देवता।	रुद्र और वृष्णि (वेद) के पुत्र।	महादेव के गण, श्री गणेश के आदेश पर गण परत में निवास करते हैं।
ये देवता वैदिक परंपरा के मूल स्तंभ हैं – जिनके माध्यम से ऋत, धर्म, और प्राकृतिक शक्तियाँ संतुलित रूप से कार्य करती हैं।	संभवतः इष्ट देवता के विविध रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं।	सत्य, संकल्प, काल जैसे सार्वभौमिक गुणों के प्रतीक।	वैदिक अनुष्ठानों और ऋचाओं के मूर्त रूप; पवित्र ज्ञान और अनुशासन के धारक।	मानसिक गुणों के साक्षात रूप, आध्यात्मिक और भौतिक प्रकाश के प्रतीक।	कर्म का लेखा-जोखा रखते हैं, आत्माओं को मार्ग दिखाते हैं, दंड का विधान करते हैं, और मृत्यु के पश्चात लोकों में मार्गदर्शन करते हैं।	इंद्रदेव के सहायक योद्धा, यज्ञों को शुद्ध करने वाले, और प्रकृति की शक्तियों के रूप में कार्यरत।	ब्रह्मांडीय कार्यों की देखरेख करते हैं और पवित्र लोकों की रक्षा करते हैं।
*(बृहदारण्यक उपनिषद, शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण)	*(विष्णु और शिव पुराण)	*(विष्णु पुराण; आषाढ़ नक्षत्र से संबंधित)	*(अग्नि और शिव पुराण)	*(शिव पुराण)	*(शिव पुराण)	*(ऋग्वेद और वामन पुराण)	*(शिव पुराण)

*संख्याएँ और वर्गीकरण ग्रंथों के अनुसार भिन्न भिन्न हो सकते हैं।

प्रमुख देवताओं के अतिरिक्त देवता

देवता: गणाधिपति गणेश, कार्तिकेय, धर्मराज, चित्रगुप्त, आर्यमा, हनुमान, भैरव, वन, अग्निदेव, कामदेव, चंद्र, यम, शनि, सोम, ऋभु, ध्यु, सूर्य, बृहस्पति, वक, काल, अन्न, वनस्पति, पर्वत, धेनु, सनकादि, गरुड़, अनंत शेष, वासुकी, तक्षक, कर्कोटक, पिंगल, जय, विजय-और भी अनेक देवता।

देवियाँ: भैरवी, यामी, पृथु, पुषा, आपा, सविता, उषा, औषधि, अरण्य, ऋतु, तष्टा, सावित्री, गायत्री, श्री, भूदेवी, श्रद्धा, शची, दिति, अदिति -तथा अन्य असंख्य देवियाँ।

मुख्य और प्रमुख देवताओं के परे एक विशाल तंत्र विद्यमान है — जिसमें दैवी और अर्धदैवी शक्तियाँ सम्मिलित हैं: दिशाओं के रक्षक, नक्षत्र देवता, ग्रह देवता, यक्ष, गंधर्व, किन्नर — और समुद्र मंथन से उत्पन्न ६० करोड़ से अधिक अप्सराएँ। मत्स्य पुराण के अनुसार, सैकड़ों देवी रूप और दैवी शक्तियाँ सृष्टि की लय को बनाए रखने में सहायक हैं। ये शक्तियाँ केवल पूजनीय नहीं — वे ब्रह्मांडीय संतुलन, कालचक्र, और धर्म की गति को संचालित करती हैं।

देवता न तो **३३ कोटि हैं और न ही ३३ करोड़**। उनकी संख्या विभिन्न कल्पों में बदलती रहती है। दैवी व्यवस्था स्थिर नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होती रहती है।

भगवान श्रीकृष्ण परम दिव्य सत्ता और ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता हैं।

हिमालयन मेडिटेशन

महर्षि पुलह

॥ पुलहाय नमस्तुभ्यं ब्रह्मपुत्राय धीमते। सप्तर्षिमण्डले श्रेष्ठं तपस्विनं नमाम्यहम् ॥

मैं महर्षि पुलह को प्रणाम करता हूँ – जो ब्रह्मा के बुद्धिमान पुत्र हैं, सप्तर्षियों में श्रेष्ठ हैं, और महान तपस्वी हैं।

सितंबर : भाद्रपद-अश्विन

सोम		अजा एकादशी कृ एकादशी 07	विनायक चतुर्थी गणेश चतुर्थी गौरी हब्बा हरतालिका तीज शु तृतीया 14	शु दशमी 21	कृ द्वितीया 28
मंगल	अमावस्यांत तृतीय मंगल गौरी व्रत कृ चतुर्थी 01	प्रदोष अमावस्यांत चतुर्थ मंगल गौरी व्रत पर्युषण प्रारंभ कृ द्वादशी 08	संवत्सरी पर्व ऋषि पंचमी कृ चतुर्थी, कृ पंचमी 15	परिवर्तिनी एकादशी शु एकादशी 22	महा भरणी संकष्टी कृ तृतीया 29
बुध	रांधना छट कृ पंचमी कृ षष्ठी 02	मासिक शिवरात्रि कृ त्रयोदशी 09	स्कंद षष्ठी शु पंचमी 16	वामन जयंती भुवनेश्वरी जयंती शरद विषुव 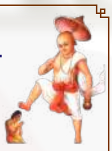 शु द्वादशी 23	मासिक कार्थिगाई कृ चतुर्थी 30
गुरु	मासिक कार्थिगाई शीतल सातम कृ सप्तमी 03	अन्वाधान कृ चतुर्दशी 10	ज्येष्ठ गौरी आवाहन कन्या संक्रांति विश्वकर्म पूजा शु षष्ठी 17	प्रदोष शु त्रयोदशी 24	
शुक्र	श्री कृष्ण जन्माष्टमी रोहिणी व्रत कालाष्टमी अगस्त्य अर्घ्य काली जयंती कृ अष्टमी 04	पोला अमावस्या वृषभोत्सव इष्टि अमावस्या 11	ज्येष्ठ गौरी पूजा दूर्वा पूजा ललिता सप्तमी शु सप्तमी 18	अनंत चतुर्दशी गणेश विसर्जन शु चतुर्दशी 25	
शनि	दही हंडी कृ नवमी 05	भाद्रपद सामवेद उपकर्म शु प्रतिपदा 12	मासिक दुर्गाष्टमी ज्येष्ठ गौरी विसर्जन महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ राधा अष्टमी शु अष्टमी 19	पूर्णिमा श्राद्ध पूर्णिमा अन्वाधान पूर्णिमा 26	
रवि	कृ दशमी 06	वराह जयंती शु द्वितीया 13	शु नवमी 20	पूर्णिमंत अश्विन* उत्तर इष्टि पितृपक्ष प्रारंभ कृ प्रतिपदा 27	

क्या आज भी सप्तर्षि अस्तित्व में हैं ?

सनातन धर्म की विशाल ब्रह्मांडीय ताने-बाने में, **सात तेजस्वी ऋषि — सप्तर्षि** — ज्ञान और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के शाश्वत प्रकाशस्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित हैं। भगवान द्वारा **'आदियोगी'** रूप में चयनित, उन्हें योग, आंतरिक साक्षात्कार, और दैवी बुद्धि का सार सौंपा गया, जिससे वे पवित्र ज्ञान के प्रथम संवाहक बने। प्रत्येक ऋषि ब्रह्मांडीय अंतर्दृष्टि के एक विशिष्ट पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं— कुछ महर्षि संस्थापक के रूप में, कुछ वैदिक रचयिता के रूप में, और सभी धर्म के संरक्षक के रूप में। वे राजाओं, देवताओं, और साधकों के लिए मार्गदर्शक बनकर मानवता की आध्यात्मिक विरासत को स्थिर करते हैं। विस्तृत मन्वंतर कालों में, नए सप्तर्षि प्रकट होते हैं, दैवी कार्य को आगे बढ़ाते हैं और हर युग के अनुसार अपने ज्ञान को रूपांतरित करते हैं।

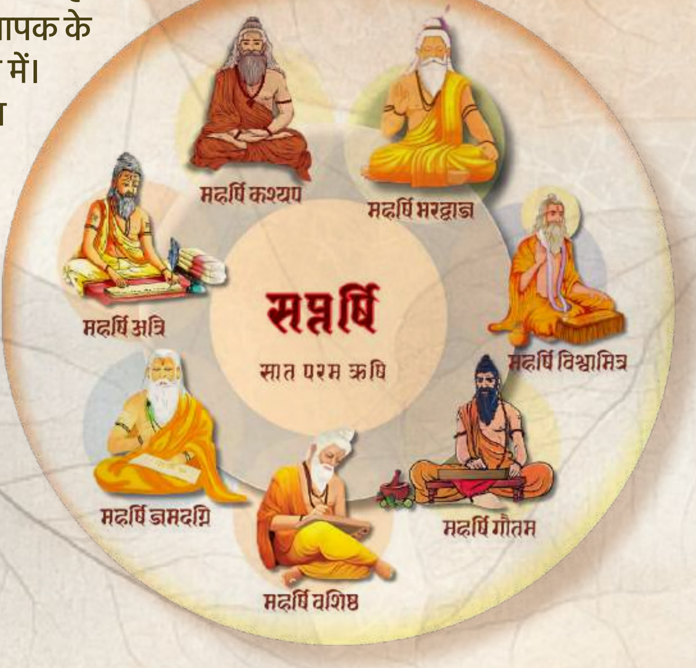

मन्वंतर की संरचना

ब्रह्मदेव के **एक दिन (कल्प) में 14 मन्वंतर** होते हैं।
प्रत्येक मन्वंतर में होते हैं

- **७१-७२ महायुग**
- **१ मनु** – मानवता के शासक और मार्गदर्शक
- **७ सप्तर्षि** – धर्म का उपदेश देने वाले महान ऋषि
- **१ इन्द्रदेव** – देवताओं के राजा
- नए देवता समूह और अन्य दिव्य प्राणी
- चलिए अब कुछ मन्वंतर और उनके संबंधित सप्तर्षियों का अन्वेषण करें।

स्वयंभुव मनु	स्वरोचिष मनु	उत्तम मनु	तमस मनु	रैवत मनु	चाक्षुष मनु	वैवस्वत मनु (वर्तमान)	सावर्णि मनु (आगामी)
मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, वशिष्ठ	ऊर्जा, स्तम्भ, प्राण, नन्द, ऋषभ, निष्चर, अर्वरीवत	कौकुंधि, कुरुंडी, दलय, शंख, प्रवाहित, मित, सम्मित	ज्योतिर्धाम, पृथु, काव्य, चैत्र, अग्नि, वनक, पीवर	हिरण्यरोम, वेदश्री, ऊर्ध्वबाहु, वेदबाहु, सुधामन, पर्जन्य, महामुनि	सुमेधस, विराजस, हविष्मत, उत्तम, मधु, अभिनमन, सहिष्णु	कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, भरद्वाज	गालव, दीप्तिमान, परशुराम, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, ऋष्यशृंग, व्यासदेव

सप्तर्षि तारे कैसे बने

पुराणों में वर्णित है कि सप्तर्षियों को भगवान श्री हरि विष्णु द्वारा ध्रुव — उनके बाल भक्त — के रक्षक बनाया गया। ध्रुव की भक्ति से प्रसन्न होकर, भगवान श्री हरि विष्णु ने उन्हें आकाश में स्थायी स्थान दिया — **ध्रुव तारा (ध्रुव नक्षत्र-Pole Star)** के रूप में। भक्त ध्रुव की रक्षा हेतु, भगवान श्री हरि विष्णु ने उनके चारों ओर सात ऋषियों को स्थापित किया। वे **सात ऋषि महाभृंग (उत्तरी सप्तर्षि मंडल-Ursa major)** के सात तारे बने, और सप्तर्षि मंडल का निर्माण हुआ — जो शाश्वत ज्ञान और दैवी मार्गदर्शन के प्रतीक हैं।

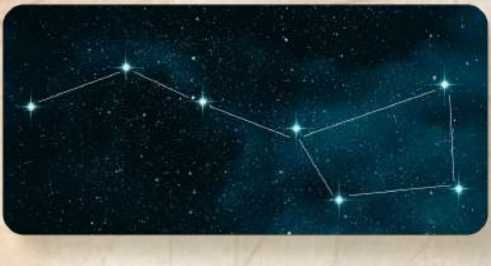

खगोलशास्त्र में सप्तर्षि नक्षत्र

सप्तर्षि तारे महाभृंग तारामंडल (Ursa Major) में महाकरछुल (Big Dipper) का निर्माण करते हैं। उनका आकार एक करछुल जैसा है, जिसे उत्तरी गोलार्ध में आसानी से देखा जा सकता है। शताब्दियों से उन्होंने यात्रियों को उत्तरी ध्रुव की दिशा पहचानने में सहायता की है। आज वे प्राचीन ज्ञान को आधुनिक खगोलशास्त्र से जोड़ते हैं।

कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः ।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः ।
ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः ॥

इस पवित्र वैवस्वत मन्वंतर में, महर्षि विश्वामित्र — ब्रह्मांड के मित्र — हमें शुद्ध चेतना के रूप में हमारे मित्र, दार्शनिक और गुरु के रूप में मार्गदर्शन देते हैं। हमारे दिव्य मार्गदर्शक के रूप में, वे अन्य महान ऋषियों के साथ हमारे ज्ञान की सुनिश्चितता करते हैं। आइए हम सभी परम ऋषियों को प्रणाम करें और अनंत की ओर अपने पथ पर विनम्रतापूर्वक उनका मार्गदर्शन प्राप्त करे।

हिमालयन मेडिटेशन

महर्षि पुलस्त्य

॥ पुलस्त्यं वन्दे सततं ब्रह्मर्षिं ज्ञानसागरम् । रावणगुरुं तपस्विनं विष्णुभक्तं महामतिम् ॥

मैं महर्षि पुलस्त्य को सतत वंदन करता हूँ – जो ब्रह्मर्षि हैं और ज्ञान के सागर हैं,
रावण के गुरु हैं, विष्णु भक्त हैं, और महान बुद्धि वाले तपस्वी हैं।

अक्तूबर : अश्विन-कार्तीक

सोम		05 कृ दशमी	12 शु द्वितीया	मासिक दुर्गाष्टमी महानवमी सरस्वती विसर्जन संधि पूजा 19 शु अष्टमी	कोजागिरी पूर्णिमा शरद पूर्णिमा इष्टि वाल्मीकि जयंती अश्विन नवपाद ओली समाप्त 26 पूर्णिमा
मंगल		इंदिरा एकादशी 06 कृ एकादशी	13 शु तृतीया	विजय दशमी दशेरा आयुध पूजा बुद्ध जयंती दुर्गा विसर्जन 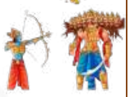 शु नवमी, शु दशमी 20	पूर्णिमंत कार्तीक* उत्तर मासिक कार्थिगाई 27 कृ प्रतिपदा, कृ द्वितीया
बुध		07 कृ द्वादशी	विनायक चतुर्थी 14 शु चतुर्थी	विद्यारंभ काशी भारत मिलाप मध्वाचार्य जयंती 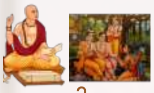 21 शु दशमी	अट्ल तद्दी 28 कृ तृतीया
गुरु	रोहिणी व्रत 01 कृ पंचमी	प्रदोष मासिक शिवरात्रि 08 कृ त्रयोदशी	उपांग ललिता व्रत 15 शु पंचमी	पापांकुशा एकादशी 22 शु एकादशी	संकष्टी करवा चौथ रोहिणी व्रत 29 कृ चतुर्थी
शुक्र	गांधी जयंती 02 कृ षष्ठी	09 कृ चतुर्दशी	स्कंद षष्ठी सरस्वती आवाहन बिल्व निमंत्रण कल्पारंभ अकाल बोधन 16 शु षष्ठी	प्रदोष 23 शु द्वादशी	30 कृ पंचमी
शनि	जीवितपुत्रिका व्रत कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी महालक्ष्मी व्रत समाप्ति 03 कृ सप्तमी, कृ अष्टमी	अमावस्या सर्वपितृ अमावस्या अन्वाधान 10 अमावस्या	सरस्वती पूजा तुला संक्रांति नवपत्रिका पूजा अश्विन नवपाद ओली प्रारंभ 17 शु सप्तमी	24 शु त्रयोदशी	31 कृ षष्ठी
रवि	04 कृ नवमी	अश्विन इष्टि घटस्थापना नवरात्रि प्रारंभ 11 शु प्रतिपदा	सरस्वती बलिदान 18 शु सप्तमी	अन्वाधान 25 शु चतुर्दशी	

हिमालयन मेडिटेशन

गणित से गुरुत्वाकर्षण

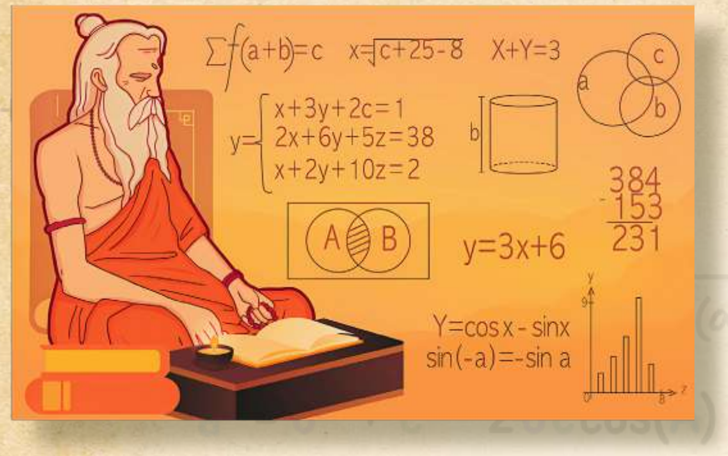

वेदीय ज्यामिति से अनंत सांख्य श्रृंखला तक, प्राचीन भारतीय महर्षियों ने **गणित और खगोलशास्त्र** में क्रांति ला दी। **महर्षि बौधायन** ने पाइथागोरस से बहुत पहले पाइथागोरस प्रमेय प्रस्तुत की, जबकि **महर्षि पिंगल** ने द्विआधारी तर्क और संयोजनशास्त्र की नींव रखी। **महर्षि याज्ञवल्क्य** ने सौर असममिति और ९५-वर्षीय चंद्र-सौर चक्र का वर्णन किया, और **महर्षि पराशर** तथा **महर्षि गर्ग** ने ज्योतिष और आकाशीय संकेतों को व्यवस्थित किया। **महर्षि आर्यभट्ट** ने पृथ्वी की घूर्णन गति का प्रस्ताव रखा, π की गणना की, और ग्रहणों का मॉडल प्रस्तुत किया; **महर्षि वराहमिहिर** ने खगोलशास्त्रीय ग्रंथों और त्रिकोणमितीय सारणियों का संकलन किया। **महर्षि ब्रह्मगुप्त** ने शून्य को परिभाषित किया, द्विघात समीकरणों को हल किया, और ग्रहों की गति को परिष्कृत किया। **महर्षि भास्कराचार्य प्रथम** ने साइन (sine) के सन्निकटन को आगे बढ़ाया, और **महर्षि महावीर** ने बीजगणित और क्रमचय को व्यवस्थित किया। **महर्षि भास्कराचार्य द्वितीय** ने चक्रीय विधियों का अन्वेषण किया और कलनशास्त्र की ओर संकेत किया। केरल विद्यालय ने , **महर्षि माधव, महर्षि नीलकंठ सोमयाजी, और महर्षि ज्येष्ठदेव** के नेतृत्व में, अनंत सांख्य श्रृंखला, गोल ज्यामिति, और कठोर कलनशास्त्रीय प्रमाण विकसित किए — पाइथागोरस, डेसकार्टेस, पास्कल, न्यूटन, लाइबनिज, और गाउस आदि द्वारा पश्चिम में इन अवधारणाओं के औपचारिककरण से कई शताब्दियों पहले।

व्यवहार - गणित (प्रायोगिक अंकगणित)

ऋजुता समीकरणेषु, विशेषाङ्कितकौशलम्,
अधिकरणेषु सम्प्रयोगः, प्राचीनाभ्यः स्थिरम्।

भास्कराचार्य की लीलावती से ऋजु समीकरण

अर्थः ऋजु समीकरणों को हल करने की दक्षता और विशिष्ट संख्यात्मक विधियों का प्रयोग प्राचीन गणितीय विज्ञानों में सुव्यवस्थित रुप से स्थापित है। आइए लीलावती से एक शास्त्रीय समस्या पर विचार करें: "एक हार मोतियों से बना है। उनमें से एक-तिहाई सफेद हैं, एक-पाँचवाँ भाग काले हैं, एक-छठा भाग लाल हैं, और शेष ६ नीले हैं। कुल मोतियों की संख्या कितनी है?"

कुल मोतियों की संख्या को x मानते हैं।

$$\tfrac{1}{3}x + \tfrac{1}{5}x + \tfrac{1}{6}x + 6 = x,$$

३, ५ और ६ का लघुत्तम समापवर्त्य (LCM) = 30 है। पूरे समीकरण को 30 से गुणा करें।

$$10x + 6x + 5x + 180 = 30x$$

$$21x + 180 = 30x,$$
$$180 = 9x$$
$$x = 20$$

कुल बीस मोती

स्थान मान प्रणाली (PLACE VALUE SYSTEM)

एकं च दशं च शतं च सहस्त्रं त्वयुतनियुते तथा प्रयुतम् ।
कोट्यर्बुदं च वृन्दं स्थानात् स्थानं दशगुणं स्थात् ॥

अर्थ: यह श्लोक एक से वृंद तक बढ़ते हुए स्थान मानों को सूचीबद्ध करता है, जहाँ प्रत्येक स्थान अपने पूर्ववर्ती से दस गुना होता है, जो दशमलव प्रणाली की संरचना को दर्शाता है। "स्थानात् स्थानं दशगुणं स्थात्" का अर्थ है: प्रत्येक अंक का स्थान दाएँ से बाएँ दस गुना बढ़ता है।

संचयन (COMBINATION)

एकद्वित्र्यादिमूषावहनमितिमह्ने ब्रूहि भूमिभर्तुः ।
हर्म्ये रम्येऽष्टमुषे चतुरविरचितश्लक्ष्णशालाविशाले ॥

महर्षि भास्कराचार्य एक चतुर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं: "एक महल में ८ द्वार हैं, यदि कोई भी संख्या में द्वार खोले जा सकते हों, तो हवा कितने प्रकार से प्रवेश कर सकती है?"

यहाँ, 8C1 एक द्वार खोलने के तरीकों की संख्या को दर्शाता है, 8C2 दो द्वार खोलने के तरीकों की संख्या को दर्शाता है, और इसी प्रकार 8C8 तक, जो सभी आठ द्वार खोलने के तरीकों की संख्या है। कुल योग सभी शून्य से भिन्न संयोजनों का योग है:

$$^8C_1 + {}^8C_2 + {}^8C_3 + {}^8C_4 + {}^8C_5 + {}^8C_6 + {}^8C_7 + {}^8C_8 = 255$$

तो, द्वार खोलने के 255 संभावित तरीके हैं।

ग्रह स्थितियाँ

सौरमण्डलस्य वक्रता, ज्योतिषशास्त्रे निरुपिता, ग्रहेषु च प्रकाशस्य गति, विज्ञायते यथाविधि।

सौरमंडल की वक्रता का वर्णन ज्योतिष शास्त्र में किया गया है; और ग्रहों के बीच प्रकाश की गति को उसी के अनुसार समझा जाता है।

प्राचीन भारतीय गणित और खगोलशास्त्र आधुनिक विज्ञान के साथ विरोध में नहीं, बल्कि शाश्वत निरंतरता में समन्वित है। यद्यपि उपकरण और शब्दावली बदल गई है, महर्षियों की ब्रह्मांडीय दृष्टि आज भी विद्यमान है। आइए हम उन्हें केवल ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे अग्रदूतों के रूप में सम्मानित करें जिनकी विरासत आज भी जिज्ञासा, शुद्धता और आश्चर्य को मार्गदर्शित करती है। उनकी अंतर्दृष्टियाँ समय के अधीन नहीं थीं — वे सार्वभौमिक सत्य थीं, जो प्रत्येक युग द्वारा पुनः खोजे जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। आज भी, उनका ज्ञान विज्ञान और दर्शन में नए क्षितिजों को प्रेरित करता है।

महर्षि जमदग्नि

॥ जमदग्निं नमस्यामि ब्रह्मर्षिं तपसां निधिम् । परशुरामपितुं वीरं कामधेनुं यशस्विनम् ॥

मैं महर्षि जमदग्नि को प्रणाम करता हूँ – जो ब्रह्मर्षि हैं और तपस्या के भंडार हैं,
महर्षि परशुराम के वीर पिता हैं, और कामधेनु के यशस्वी स्वामी हैं।

नवंबर : कार्तीक-मार्गशीर्ष

सोम	कृ सप्तमी **30**	कृ अष्टमी **02**	**अमावस्या** अन्नकूट बलि प्रतिपदा गोवर्धन पूजा अन्वाधान अमावस्या, शु प्रतिपदा **09**	वृश्चिक संक्रांति कार्तीक अष्टाह्निका प्रारंभ शु सप्तमी **16**	मणिकर्णिका स्नान कार्तीक चौमासी चौदस शु चतुर्दशी **23**
मंगल		कृ नवमी **03**	**कार्तीक** इष्टि गुजराती न्यू ईयर शु प्रतिपदा **10**	मासिक दुर्गाष्टमी गोपाष्टमी मंडला पूजा प्रारंभ शु अष्टमी **17**	देव दिवाली **पूर्णिमा** गुरु नानक जयंती अन्वाधान कार्थीगाई दीपम भीष्म पंचक समाप्ति पूर्णिमा **24**
बुध		कृ दशमी **04**	भाई दूज चित्रगुप्त पूजा शु द्वितीया **11**	अक्षय नवमी जगद्धात्री पूजा शु नवमी **18**	पूर्णिमंत मार्गशीर्ष* उत्तर इष्टि रोहिणी व्रत कृ प्रतिपदा **25**
गुरु		गोवत्स द्वादशी रमा एकादशी कृ एकादशी **05**	शु तृतीया **12**	शु नवमी **19**	कृ द्वितीया **26**
शुक्र		धनत्रयोदशी प्रदोष यम दीपम यम पंचक प्रारंभ कृ द्वादशी **06**	विनायक चतुर्थी नागुल चविति शु चतुर्थी **13**	कंस वध देवउत्थान एकदशी भीष्म पंचक प्रारंभ शु दशमी, शु एकादशी **20**	संकष्टी कृ तृतीया, कृ चतुर्थी **27**
शनि		काली चौदस हनुमान पूजा मासिक शिवरात्रि कृ त्रयोदशी **07**	लाभ पंचमी शु पंचमी **14**	तुलसी विवाह देवउत्थान एकादशी शु द्वादशी **21**	कृ पंचमी **28**
रवि	राधा कुंड स्नान कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी भानु सप्तमी कृ सप्तमी **01**	लक्ष्मी पूजा, दिवाली नरक चतुर्दशी चोपड़ा पूजन, कमला जयंती दीपमालिका शारदा, काली पूजा केदार गौरी व्रत कृ चतुर्दशी, अमावस्या **08**	छट पूजा स्कंद षष्ठी सूरा संघारम शु षष्ठी **15**	विश्वेश्वर व्रत प्रदोष शु त्रयोदशी **22**	कृ षष्ठी **29**

नाट्यशास्त्र

सृजनात्मक कलाओं का पंचम वेद

परंपरा के अनुसार, देवताओं के अनुरोध पर ब्रह्मदेव ने नाट्यशास्त्र की रचना की। उन्होंने चार वेदों के तत्वों को समाहित कर पंचम वेद **नाट्यशास्त्र** — का निर्माण किया:

- ऋग्वेद: पाथ्य (पाठ/संवाद)
- सामवेद: गीत (संगीत)
- यजुर्वेद: अभिनय (हाव-भाव/अंग संचालन)
- अथर्ववेद: रस (सौंदर्य अनुभव)

यह पवित्र ज्ञान **महर्षि भरत** — 'भारतीय **नाट्यकला' के जनक** — और उनके सौ पुत्रों को सौंपा गया। **नाट्यवेद** संस्कृत में रचित है, जिसमें ३६ अध्याय और ६,००० से अधिक श्लोक हैं, जो सृजनात्मक कलाओं का विश्वकोशीय विवरण प्रस्तुत करते हैं (जैसा कि तालिका में दर्शाया गया है)।

विषय	आवृत विषयवस्तु
नाट्य	रचना, कथानक, पात्रों के प्रकार
नृत्य	मुद्राएँ, करण, वृत्तियाँ
संगीत	ग्राम, वाद्ययंत्र, ताल
रंगमंच कला	वास्तुशिल्प, उपकरण, वेशभूषा, श्रृंगार
रसशास्त्र / सौंदर्यशास्त्र	रस सिद्धांत — भावानुभूति

ताल चक्र – लय का चक्र

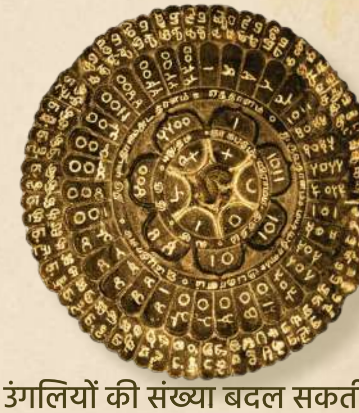

एक सुंदर उदाहरण **कर्नाटक संगीत** की लिपि का — शिला पर उकेरे गए ताल चिह्न — तमिलनाडु के **नेल्लैयप्पर मंदिर** में देखा जा सकता है, जहाँ ये तमिल भाषा में अंकित हैं। आइए मूल बातों से आरंभ करें: भारतीय संगीत में ताल का अर्थ है लय। यह तीन मूलभूत इकाइयों से बना होता है — **अनुध्रुतम् (विरामम्), द्रुतम्, और लघु** — प्रत्येक को विशिष्ट चिह्नों द्वारा दर्शाया गया है। ये चिह्न ताल चक्र की सबसे भीतरी बहुरंगी वलय में स्पष्ट रूप से अंकित हैं।

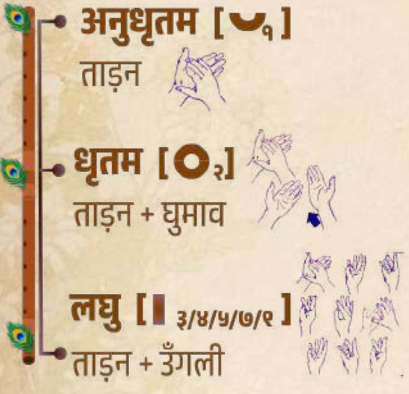

अनुधृतम [◡₁]
ताड़न

धृतम [O₂]
ताड़न + घुमाव

लघु [I ३/४/५/७/९]
ताड़न + उँगली

परंतु लघु में एक विशेषता है — ताली के बाद प्रयुक्त उंगलियों की संख्या बदल सकती है। आप दो, तीन या उससे अधिक उंगलियाँ गिन सकते हैं। इसका अर्थ है कि लघु का ताल मात्र निश्चित नहीं होता, जिससे लय को मापना कठिन हो जाता है। इस समस्या के समाधान हेतु प्राचीन विद्वानों ने जथि की अवधारणा प्रस्तुत की — जो यह निर्धारित करती है कि एक लघु में कितनी मात्राएँ होती हैं। **जथि के पाँच प्रकार हैं**, और प्रत्येक लघु को एक निश्चित मात्राएँ प्रदान करते हैं:

जथि का नाम	मात्राएँ	हस्त क्रिया
तिस्र जथि	३	ताड़न + २ अंगुलियाँ
चतुश्र जथि	४	ताड़न + ३ अंगुलियाँ
कण्ड जथि	५	ताड़न + ४ अंगुलियाँ
मिश्र जथि	७	ताड़न + ६ अंगुलियाँ
संकीर्ण जथि	९	ताड़न + ८ अंगुलियाँ

अब चित्र में सात ताल दर्शाए गए हैं (लाल वलय और लाल पंखुड़ियों के साथ), जिनमें प्रत्येक की लयात्मक संरचना भिन्न है: ध्रुव ताल (IOII), मत्य ताल (IOI), रूपक ताल (OI), झम्प ताल (IUO), त्रिपुट ताल (IOO), अट ताल (IIOO), और एक ताल (I)

Eka Thalam
Ata Thalam

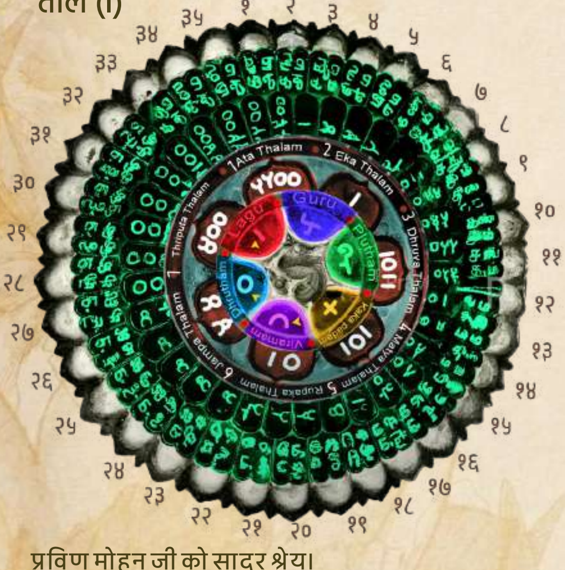

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५
1 Ata Thalam
2 Eka Thalam
3 Dhruva Thalam
4 Matya Thalam
5 Rupaka Thalam
6 Jampa Thalam
7 Thripuda Thalam
Guru
Laghu
Plutham
Drutham
Viramam

प्रविण मोहन जी को सादर श्रेय।

प्रत्येक ताल में कम से कम एक लघु होता है, और उसकी मात्राएँ जथि के अनुसार बदलती हैं। ७ तालों और ५ जथियों के साथ, कुल ३५ लयात्मक संयोजन प्राप्त होते हैं। ये ताल चक्र के सबसे बाहरी हरे वलय में सुंदर रूप से अंकित हैं, जहाँ प्रत्येक खंड को उसके नाम और चिह्न अनुक्रम द्वारा चिह्नित किया गया है — जैसा कि एक ताल के ज़ूम किए गए उदाहरण में देखा जा सकता है।

ध्वनि को सिर्फ़ सुना जाता है परन्तु देखा नहीं जा सकता फिर भी, प्राचीन स्थापत्यकारों ने अद्भुत कार्य किया: उन्होंने ध्वनि को दृश्य रूप में प्रकट किया। आज आधुनिक विज्ञान की एक शाखा साइमैटिक्स (Cymatics) ध्वनि को आकृतियों के माध्यम से दृश्य रूप में दर्शाने की क्षमता प्रदान करती है। इसी कारण मंदिरों की छतों पर अक्सर साइमैटिक जैसी डिज़ाइनें दिखाई देती हैं — जटिल, सममित, और कंपन-आधारित।

यह स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय वास्तुकारों को ध्वनि, ताल, और संगीत की गहन समझ थी। मंदिर निर्माण के पीछे का विज्ञान केवल स्थापत्य नहीं, बल्कि लय, कंपन, और चेतना के स्तर तक विस्तृत है — जितना हम सामान्यतः समझते हैं, उससे कहीं अधिक गहरा।

महर्षि मरीचि

॥ मरीचये नमस्तुभ्यं ब्रह्मपुत्राय धीमते । कश्यपपितरं वन्दे ऋषिमण्डलमालिनम् ॥

मैं महर्षि मरीचि को प्रणाम करता हूँ – जो ब्रह्मा के बुद्धिमान पुत्र हैं,
महर्षि कश्यप के पिता हैं, और ऋषिमंडल में शोभायमान हैं।

डिसेंबर : मार्गशीर्ष-पौष

सोम		मासिक शिवरात्रि कृ चतुर्दशी **07**	**विवाह पंचमी** शु पंचमी **14**	प्रदोष मासिक कार्थिगाई शु द्वादशी **21**	कृ पंचमी **28**
मंगल	**कालभैरव जयंती** कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी कृ अष्टमी **01**	**अमावस्या** अन्वाधान अमावस्या **08**	**चंपा षष्ठी** स्कंद षष्ठी शु षष्ठी **15**	**हनुमान जयंती कन्नड़*** **लघुत्तम दिवस** शु त्रयोदशी **22**	कृ षष्ठी **29**
बुध	कृ नवमी **02**	**मार्गशीर्ष** इष्टि शु प्रतिपदा **09**	धनु संक्रांति शु सप्तमी **16**	**दत्तात्रेय** **अन्नपूर्णा** **भैरवी जयंती** **पूर्णिमा** अन्वाधान रोहिणी व्रत शु चतुर्दशी , पूर्णिमा **23**	कालाष्टमी मासिक जन्माष्टमी कृ सप्तमी **30**
गुरु	कृ दशमी **03**	शु प्रतिपदा **10**	मासिक दुर्गाष्टमी शु अष्टमी **17**	**पूर्णिमंत पौष*** **उत्तर** इष्टि कृ प्रतिपदा **24**	कृ अष्टमी **31**
शुक्र	**उत्पन्न एकादशी** कृ एकादशी **04**	शु द्वितीया **11**	शु नवमी **18**	कृ द्वितीया **25**	
शनि	कृ द्वादशी **05**	शु तृतीया **12**	शु दशमी **19**	**संकष्टी** कृ तृतीया, कृ चतुर्थी **26**	
रवि	प्रदोष कृ त्रयोदशी **06**	**विनायक चतुर्थी** शु चतुर्थी **13**	**गीता जयंती** **मोक्षदा एकादशी** शु एकादशी **20**	**मंडला पूजा** कृ चतुर्थी **27**	

योग

।योग हिं कर्मर कौशल।

अंतरात्मा के ऋषि का उद्बोधन

हिमालय की शांति से लेकर संस्कृत छंदों की लय तक, भारत के ऋषि और महर्षि केवल साधु नहीं थे — वे ब्रह्मांडीय अभियंता, आध्यात्मिक वैज्ञानिक, और दूरदर्शी शिक्षाविद् थे। उनकी अंतर्दृष्टियों ने खगोलशास्त्र, गणित, संगीत, पारिस्थितिकी, भाषाशास्त्र और धर्म के मूल स्तंभों की स्थापना की। वे केवल द्रष्टा नहीं थे — वे स्वयं स्रोत थे। उनका अध्ययन करना, वास्तविकता की संरचना को पुनः खोजने के समान है।

ऋषियों ने आत्मबोध कैसे प्राप्त किया ?

उत्तर योग में निहित है — योग केवल बाह्य आसनों का अभ्यास नहीं, बल्कि यह आत्मिक जागरण की एक अंतःयात्रा है।

योग को समझने से पहले यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि योग क्या नहीं है: शीर्षासन करना, अंगों को मोड़ना या शरीर को खींचना — ये अंग मर्दन हैं, जो अष्टांग योग के तीसरे अंग "आसन" का भाग हैं — ये योग नहीं हैं। नेत्र बंद कर शून्यता पर ध्यान करते हुए निद्रा में चले जाना — यह योग नहीं है। खेल-कपड़े पहनकर योगा मैट पर खिंचाव करना — यह योग नहीं है। (ये केवल प्रारंभिक अभ्यास हैं, लक्ष्य नहीं)।

योग का अर्थ है

योग शब्द संस्कृत धातु "युज्" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है जोड़ना, एकत्र करना, या संयोग करना। योग आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की आध्यात्मिक प्रक्रिया है।

योग क्यों करें

भौतिक प्रकृति हमारे इच्छाओं को शुद्ध करने और हमें हमारी मूल पहचान — भगवान के सेवक — की ओर लौटाने के लिए अस्तित्व में है। यद्यपि हम प्रकृति के भोगी होने के भ्रम में जीते हैं, सच्चा ज्ञान हमें माया के बंधन से मुक्त करता है और दिव्यता के साथ हमारे शाश्वत संबंध को पुनः स्थापित करता है। परम धाम को यह वापसी ही मुक्ति है— शाश्वत आनंद — जो त्याग (विषयों की वासनाओं का) और योग (परमात्मा के साथ पवित्र संयोग) के अभ्यास से प्राप्त होती है।

ये गुण आंतरिक उपकरण हैं जो आकांक्षा को साक्षात्कार में रुपांतरित करते हैं — ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने भारत के ऋषियों के लिए किया।

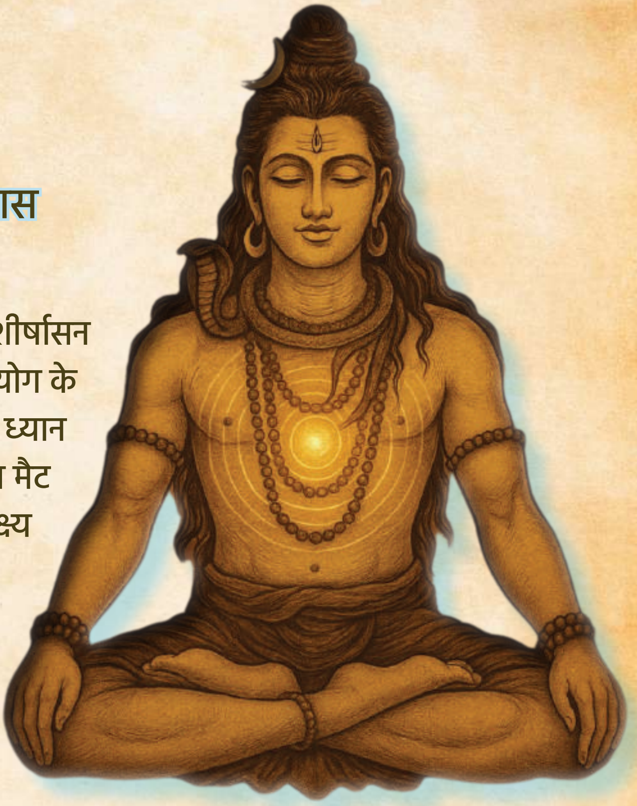

योग के माध्यम से ऋषियों ने सुख-दुख, सफलता-विफलता को पार कर लिया। वे स्थितप्रज्ञ बने — आत्मा में स्थित, परमात्मा से एकीकृत, और संसार से अचल। उनकी विरासत केवल स्मरण के लिए नहीं है — वह जीवन में उतारने योग्य है। उन्हें सम्मानित करना है — अपने भीतर के ऋषि को जागृत करना।

इस मार्ग पर चलने के लिए व्यक्ति को साधक बनना होता है — एक सच्चा जिज्ञासु। और प्रत्येक साधक को पाँच आवश्यक गुणों का विकास करना चाहिए:

उत्साह (Enthusiasm)
धैर्य (Patience)
दृढ़ संकल्प (Determination)
साहस (Courage)
त्याग (Renunciation – एकांत और वैराग्य)

हिमालयन मेडिटेशन द्वारा यज्ञ सेवा

यज्ञ ब्रह्माण्डीय परिवर्तन एवं संचरण की प्रक्रिया है

यज्ञसह प्रजा सृष्टि करि। प्रजापति चतुर्मुखधारी।
यज्ञ कले हिँ अभिवृद्धि। कामना पूर्त्ति ओ समृद्धि॥
एमन्त गुह्य तत्त्वमान। देले उपदेश अर्जुन॥ (३.10)
यज्ञकर्म कले अर्जुन। तृप्त हुअन्ति देवगण।
देवता जेबे तृप्त होइ। अभीष्ट फल देईथाई।
परष्परकु करि तृप्त। रुहन्ति सर्वे आनंदित॥ (३.11)

श्रीमद् भगवद् गीता- श्लोक ३.10,३.11 (संथ सरल भगवद् गीता)

चार मुख वाले ब्रह्मदेव ने यज्ञ करके ही सब कुछ सृष्ट किया और उन्होंने ऋषिओं और देवताओं को कुछ गुप्त रहस्य भी उजागर किए। यज्ञ करने से समृद्धि आती है और इच्छाओं की पूर्ती होती है। हे अर्जुन, जब मनुष्य यज्ञ कर्म करते हैं तब देवता प्रसन्न होते हैं और बदले में वे मनुष्यों की इच्छाओं की पूर्ती करके उन्हें आशीर्वाद देते हैं। इस प्रकार यज्ञ करके देवता और मनुष्य दोनों एक दूसरे को संतुष्ट करते हैं।

यज्ञ क्यों करें ??

क्या आप जानते हैं कि प्रत्येक देवता जीवन की कोई न कोई विशिष्ट आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं? उदाहरण के लिए, इंद्रदेव वर्षा लाते हैं, जलदेव जल प्रदान करते हैं, अग्निदेव अग्नि प्रदान करते हैं, और वायुदेव जीवनदायी वायु प्रदान करते हैं। यज्ञ एक पवित्र अनुष्ठान है, जो घर से परेशानियाँ दूर करता है और समृद्धि और खुशियाँ लाता है। आप अपने या अपने परिवार के सदस्यों के लिए यज्ञ में आहुतियाँ समर्पित कर सकते हैं। यदि आप ऐसा करना चाहते हैं तो कृपया उनके नाम और गोत्र हमें लिखकर भेजें। यज्ञ सेवा और भी बढ़े इसलिए आप यथासामर्थ्य इन यज्ञों में योगदान दे सकते हैं, यहाँ तक कि एक रुपया भी। इसके अतिरिक्त, आप दान देकर विशेष अवसरों पर अपने प्रियजनों के लिए यज्ञ की व्यवस्था भी करवा सकते हैं।

UPI ID: thehimalayanseva@sbi

Contact us: +91 7506910073, +91 8886466222

यज्ञ कैसे करें ??

हिमालयी ऋषि त्योहारों और पूर्णिमा पर यज्ञ करके परमात्मा, देवताओं और प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। प्रत्येक पूर्णिमा पर, भारत और विदेश में, 100 से भी अधिक साधक ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही मोड्स से यज्ञ करने के लिए एकजुट होते हैं, जिससे आशीर्वाद का एक सामूहिक शक्तिशाली स्रोत बनता है। ध्यान और निःस्वार्थ सेवा में अपना समय समर्पित करने के पश्चात, आप ऋषिओं से यज्ञ की विधि सीखने के लिए मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकते हैं।

QR code for
UPI ID: thehimalayanseva@sbi

जय श्री भूतनाथ
THM
THM
JAI GURUDEV

दिव्यता का अनुभव करें

हिमालयन मेडिटेशन

दिनदर्शिका 2026

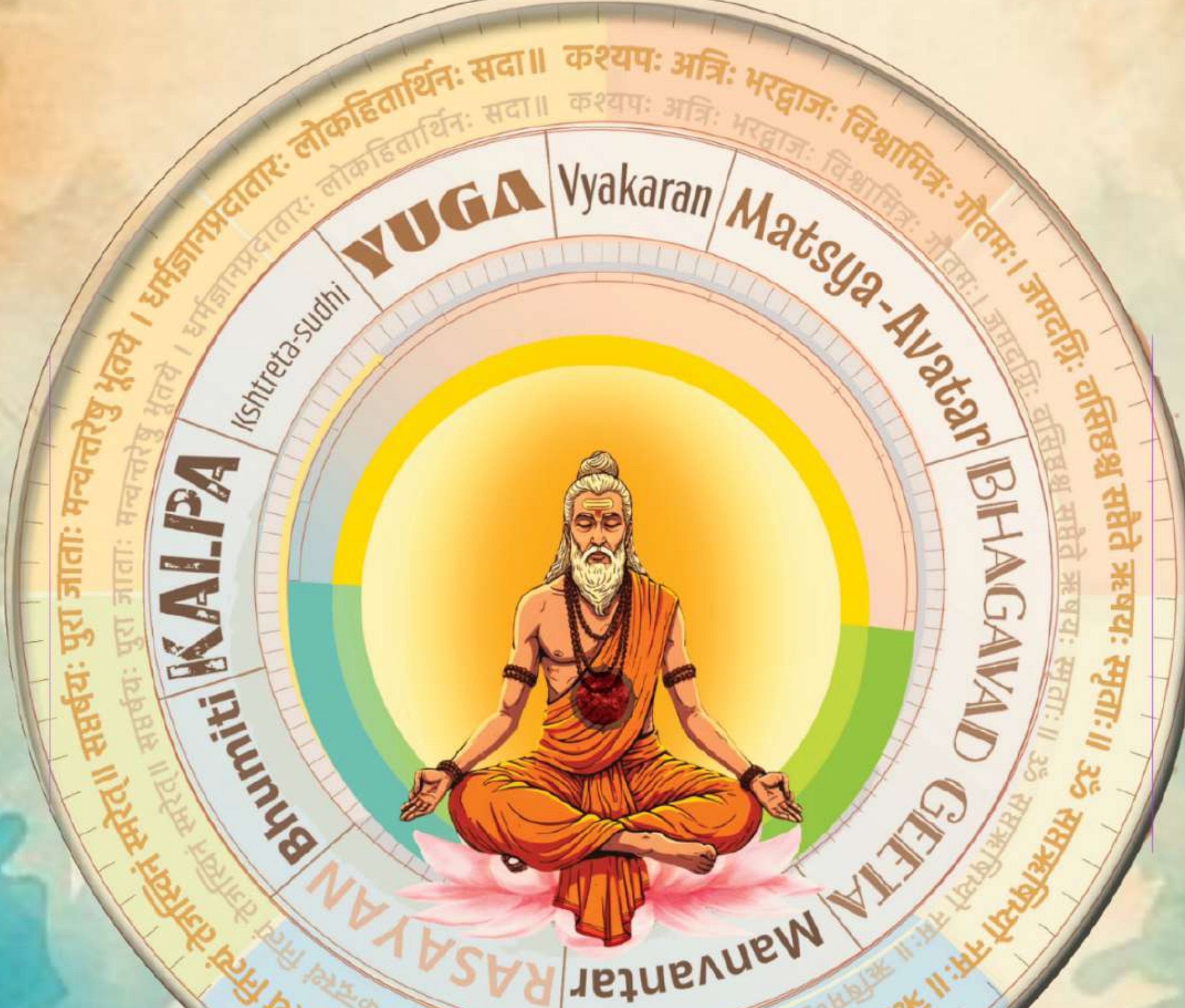
सप्तर्षयः पुरा जाताः मन्वन्तरेषु भूतये। धर्मज्ञानप्रदातारः लोकहितार्थिनः सदा॥ कश्यपः अत्रिः भरद्वाजः विश्वामित्रः गौतमः। जमदग्निः वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः॥ ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः॥
YUGA
Vyakaran
Matsya-Avatar
BHAGAVAD GEETA
Manvantar
RASAYAN
Bhumiti
KALPA
Kshtreta-sudhi

। ऋषि परम्परा ।

हिमालयन मेडिटेशन